ISSN 2394-8485

मासिक

गुरमत ज्ञान

३/-

कार्तिक-मार्गशीर्ष संवत् नानकशाही ५५५ नवंबर 2023 वर्ष १७ अंक ३

घरि घरि बाबा गावीऐ वजनि ताल म्रिदंगु रबाबा।

गुरुद्वारा प्रकाश-स्थान श्री गुरु नानक देव जी,
श्री ननकाणा साहिब, पाकिस्तान

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक
गुरमत ज्ञान

कार्तिक-मार्गशीर्ष संवत् नानकशाही 555
वर्ष 17 अंक ३ नवंबर 2023

संपादक : सतविंदर सिंह
सहायक संपादक : जगजीत सिंह

चंदा

सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब -143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 5
नसलकुशी से किरदारकुशी की ओर (संपादकीय आलेख) 7
– स. सतविंदर सिंह फूलपुर
धनु धंनु गुरू नानकु समदरसी . . . 11
–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ
युग-प्रवर्तक श्री गुरु नानक देव जी 16
–स. सुरजीत सिंघ
तउ परम गुरू नानक गुन गावउ 18
–डॉ.परमजीत कौर
श्री गुरु नानक देव जी 23
–श्री रमेश बग्गा चोहला
बंदी छोड़ सतिगुरु : श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब 25
–डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल
तमिल-कवि का गुरु-प्रेम (कविता) 27
–डॉ. नरेश
इकु बाबा अकाल रूपु दूजा रबाबी मरदाना 28
–डॉ. मनजीत कौर
समाज-सुधारक एवं साहित्यकार : भक्त नामदेव जी 32
–स. जसविंदर सिंघ खांबरा
सिक्खी-जीवन का आदर्श : श्री करतारपुर साहिब 34
–डॉ. कशमीर सिंघ नूर
बाबा बंदा सिंघ बहादुर : सिक्खी आस्था का प्रतीक 38
–डॉ नरेश
नवंबर १९८४ ई. की त्रासदी 40
– डॉ. परमवीर सिंघ
खबरनामा 46

गुरबाणी विचार

मंघिरि माहि सोहंदीआ हरि पिर संगि बैठड़ीआह ॥
तिन की सोभा किआ गणी जि साहिबि मेलड़ीआह ॥
तनु मनु मउलिआ राम सिउ संगि साध सहेलड़ीआह ॥
साध जना ते बाहरी से रहनि इकेलड़ीआह ॥
तिन दुखु न कबहू उतरै से जम कै वसि पड़ीआह ॥
जिनी राविआ प्रभु आपणा से दिसनि नित खड़ीआह ॥
रतन जवेहर लाल हरि कंठि तिना जड़ीआह ॥
नानक बांछै धूड़ि तिन प्रभ सरणी दरि पड़ीआह ॥
मंघिरि प्रभु आराधणा बहुड़ि न जनमड़ीआह ॥१०॥ *(पन्ना १३५)*

पंचम गुरु श्री गुरु अरजन देव जी महाराज बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में मार्गशीर्ष महीने में ऋतु और वातावरण के विशेष प्रसंग में जीव-स्त्री को पति-परमेश्वर के नाम के साथ जुड़ कर मानव-जीवन सफल करने के लिए मार्ग दर्शाते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि मार्गशीर्ष महीने की ठंडी-मीठी ऋतु में जो जीव-स्त्रियां प्रिय पति-परमेश्वर के संग बैठी होती हैं, जिनको मालिक ने अपने साथ मिला लिया होता है, उनकी प्रशंसा मैं क्या बयान करूं? उनकी प्रशंसा वर्णन से बाहर है। उनका तन और मन अथवा उनका समूचा अस्तित्व ही परमात्मा व अच्छे सतसंगियों के संग से उल्लासमयी हो जाता है। जो अच्छे जनों की संगत से बाहर रहती हैं वे जीव-स्त्रियां अकेली पड़ जाती हैं अर्थात् मालिक के प्यार से वंचित रह जाती हैं। उनके सांसारिक दुख कभी निवृत्त नहीं होते, बल्कि वे यमों के वश पड़ जाती हैं।

गुरु जी पुनः नेक जीव-स्त्रियों का उल्लेख करते हुए फरमान करते हैं कि जिन जीव-स्त्रियों ने मार्गशीर्ष महीने की ठंडी-मीठी ऋतु में अपने पति-परमेश्वर को स्मरण किया वे सदैव सचेत होती हैं अर्थात् सांसारिक दुख मन पर भारी नहीं होने देती। उन्हीं जीव-स्त्रियों के गले में गुण रूपी रत्न, जवाहर, लाल शोभा दे रहे होते हैं।

सतिगुरु जी का कथन है कि हे नानक! मैं तो ऐसे नेक जनों की चरण-धूलि चाहता हूं जो प्रभु के द्वार पर, उसकी शरण में आ गए हैं। मार्गशीर्ष महीने में यदि प्रभु की सच्ची आराधना की हो तो जीव को बार-बार जन्म नहीं लेना पड़ता। उसका जन्म-मरण का दुख कट जाता है।

संपादकीय

सिक्ख पंथ की सिरमौर संस्था : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी

सिक्खों की असंख्य कुर्बानियों के बाद १५ नवंबर, १९२० ई. को अस्तित्व में आई सिक्ख पंथ की सिरमौर संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी 'नानक निर्मल पंथ' के रूहानी मिशन को आगे बढ़ाने के लिए निरंतर वचनबद्ध और यत्नशील रही है। यह गुरमति सिद्धांतों और सिक्ख अधिकारों की पहरेदार है। हम शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कार्यों को गुरु साहिबान के रूहानी मिशन की निरंतरता में देखने का यत्न करेंगे।

'नानक निर्मल पंथ' के मानवतावादी, परोपकारी और रूहानी मिशन की राह में दरपेश चुनौतियों का सामना करते हुए श्री गुरु अरजन देव जी और श्री गुरु तेग़ बहादर जी ने शहादत दी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने पूरा परिवार कुर्बान कर दिया। गुरु साहिबान के बाद 'नानक निर्मल पंथ' के इस मिशन को आगे बढ़ाते हुए बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने खालसा राज कायम किया और असंख्य सिंघ-सिंघणियों सहित शहादत दी। फिर लम्बा समय सिंघों ने दल खालसा, बुड्ढा दल, तरुना दल और सिक्ख मिसलों के रूप में कठिन समय में, घल्लूघारों में असंख्य शहादतें देकर इस मिशन को चढ़दी कला में रखा। फिर महाराजा रणजीत सिंघ ने गुरु साहिबान के आशय वाले सर्वसाझे और सर्वकल्याणकारी खालसा राज की स्थापना की। महाराजा रणजीत सिंघ के अकाल प्रस्थान कर जाने के बाद अंग्रेज़ शासन-काल में जब महंतों द्वारा गुरुद्वारा साहिबान का अपमान किया जाने लगा तो गुरुद्वारा साहिबान को महंतों के कब्ज़े में से छुड़ा कर संगती प्रबंध में लाने के लिए असंख्य शहादतों के बाद शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी अस्तित्व में आई और इसका मुख्यालय श्री अमृतसर साहिब में बना। इस संसार में सबसे वित्र यदि कोई संस्था है तो वह शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी है, जिसकी बुनियाद को असंख्य सिंघ- सिघंणियों, बच्चों, बुज़ुर्गों, माताओं और यहां तक कि गोद में पल रहे बच्चों ने भी अपने ख़ून से सींचा है।

गुरु साहिबान के नक्श-ए-कदमों पर चलते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी सिक्खी के प्रचार-प्रसार, गुरुद्वारा साहिबान के प्रबंध, सिक्ख रहित मर्यादा, गुरमति सिद्धांतों की पहरेदारी, सिक्ख मसलों की पैरवी, विद्या के प्रसार और मानवतावादी परोपकारी कार्यों के लिए

निरंतर वचनबद्ध व यत्नशील है। देश-विदेश में बैठे प्रत्येक आस्थावान सिक्ख के मन में इस संस्था के प्रति अति श्रद्धा और सम्मान की भावना है। प्रत्येक गुरसिक्ख इस बात से भली-भांति अवगत है कि संसार भर में बसते किसी सिक्ख को काँटा भी चुभे तो शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी उसकी पीड़ा महसूस करती है। दुनिया भर में बसता प्रत्येक सिक्ख राष्ट्रीय स्तर पर पैदा होती किसी भी मुश्किल की घड़ी में अपने पीछे एक बड़े परिवार-- शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को खड़ा महसूस करता है। इस संस्था के अस्तित्व के कारण राष्ट्रीय स्तर पर अपने अधिकारों की रक्षा के लिए जो सहारा सिक्खों के पास है वह किसी अन्य के पास नहीं। प्रत्येक सिक्ख को इस संस्था पर गर्व है। हज़ारों सिक्ख परिवारों का रोज़गार इस संस्था के माध्यम से चल रहा है। इस संस्था में बहुत-से सदस्य साहिबान और कर्मचारी शहीदों के परिवार में से हैं, बहुत-से धर्मी फौजियों के परिवार में से हैं। इतने बड़े प्रबंध में कहीं कोई लापरवाही हो जाना स्वाभाविक है। जो पदाधिकारी, कर्मचारी आज हैं, वे कल को नहीं होंगे, परन्तु यह संस्था शाश्वत है, पंथ की अमानत है, सिक्खों की अपनी है और उन्हें अपना समझने वाली है।

पंथक अधिकारों की पहरेदार होने के कारण कुछ पंथ-विरोधी ताकतें सिक्ख के मन में इस संस्था के प्रति सम्मान और विश्वास कम करने की कोशिश में भी लगी हुई हैं। प्रत्येक गुरसिक्खों को यह समझना चाहिए कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी पंथक शक्ति का आधार है। यह सिक्खों की वैधानिक ताकत है। कुछ लोगों के मन में इसके प्रति पनप रहा अविश्वास पंथक हित में नहीं। नवंबर महीने में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का स्थापना दिवस मनाया जा रहा है। हमें इसकी चढ़दी कला के लिए हमेशा अरदास करनी चाहिए व सार्थक यत्न भी करने चाहिए।

— सतविंदर सिंघ फूलपुर
फोन : 99144-19484

संपादकीय आलेख

नसलकुशी से किरदारकुशी की ओर

*– स. सतविंदर सिंघ फूलपुर**

किसी राष्ट्रीय, नसली, जाति या धार्मिक समूह को पूर्ण रूप से या आंशिक रूप से तबाह करने की मंशा से की गई कार्यवाही, जैसे कि उस समूह के जीवों को मारना, शारीरिक या मानसिक यातनाएं देना, तबाही के इरादे से जानबूझ कर उस समूह पर जिंदा रहने की शर्तें थोपना आदि नसलकुशी कहलवाती है। आज़ाद भारत में नवंबर, १९८४ ई. में तत्कालीन सरकार द्वारा दिल्ली तथा अन्य बहुत-से बड़े शहरों में सरकारी तंत्र की मदद के साथ सिक्खों के गले मे टायर डाल कर उन्हें जलाना, बसों, रेलों में से निकाल कर मिट्टी का तेल और पेट्रोल डाल कर सिक्खों को जलाना सिक्खों के घरों में से सामान लूट कर उनके घरों और गुरुद्वारा साहिबान को आग लगाना; सरकार द्वारा सिक्खों के कातिलों को राशन कार्ड और वोटर सूचियों में से सिक्खों के घरों की पता-सूचियां मुहैया करवाना, पुलिस द्वारा सिक्खों के घर से हथियार छीनकर, निहत्थे सिक्खों की कत्ल-ओ-गारत करने के लिए भीड़ को भेजना यह सब देश अंदर सिक्खों की नसलकुशी करने की मंशा से की गई कार्यवाही थी। यह देश के माथे पर कभी न मिटने वाला कलंक है। यह दुनिया के इतिहास में मानवता को शर्मसार कर देने वाली कृतघ्नता की पराकाष्ठा थी। यह उन सिक्खों के प्रति देश की नफ़रत का महा-तांडव था, जिन्होंने अपनी दो प्रतिशत आबादी होने के बावजूद नब्बे प्रतिशत कुर्बानियां/शहीदियां देकर इस मुल्क को आज़ाद करवाया था।

मौजूदा दौर में सिक्ख कौम के विरोध में उतरने वाली ताकतें बहुत शातिर हैं। इन्हें पता है कि कैसे मुग़ल हुकूमत सिक्खों का खुरा-खोज मिटाने के लिए पूरा ज़ोर लगा कर थक गई, इनके सिरों के मूल्य निर्धारित किए गए, मगर सिक्ख कौम को ख़त्म न किया जा सका। इन पंथ-विरोधी ताकतों को यह भी मालूम है कि सिक्ख बहुत बहादुर और गैरतमंद कौम है। इनकी मेहनत और ईमानदारी की पूरी दुनिया कायल है। विदेशों में इन्हें अति सम्मान सहित देखा जाता है। हम सिक्खों की नसलकुशी करने में न तो कामयाब हो सके और न ही हो सकते हैं, फिर क्यों न अपने

*संपादक, गुरमति ज्ञान तथा गुरमति प्रकाश, फोन : ९९१४४-१९४८४

सरकारी ग़ैर-सरकारी साधनों का इस्तेमाल कर इनकी किरदारकुशी करने का मिशन आरंभ किया जाये। इस मकसद के लिए पूरे योजनाबद्ध ढंग के साथ काम शुरू किया जा चुका है, इसलिए अपनाए गए बहुत-से साधनों में से दो बड़े साधनों-भारतीय मीडिया और फ़िल्म उद्योग को सिक्खों को बदनाम करने की पूरी छूट दे दी गई है। वैसे तो सिक्खों की किरदारकुशी करने में सन् २०१४ के बाद भारी विस्तार देखने को मिला है, परन्तु किसान आंदोलन के समय सिक्खों का बहादुरी, निडरता, मानवतावादी सेवा-भावना वाला जो विशुद्ध किरदार सारी दुनिया ने देखा है उस ने तो पंथ-विरोधियों के अंदर बौखलाहट पैदा कर दी है। किसान आंदोलन की फतह के बाद भारतीय मीडिया और भारतीय फिल्मों में सिक्खों के किरदार को घटिया रूप में पेश करने के यत्नों में भारी विस्तार देखने को मिला है। बात यदि भारतीय मीडीया की करें तो यह उतावला होकर सिक्खों को खालिस्तानी, आतंकवादी कह कर पूरी तरह से नफरत का ज़हर उगल रहा है।

पिछले दिनों कनाडा में स. हरदीप सिंघ निज्झर के किये गए कत्ल के बाद घटित राजनैतिक घटना क्रम के बाद तो भारतीय मीडिया ने सिक्खों को बदनाम करने वाली सभी हदें पार कर दीं। लगभग पूरे भारतीय मीडिया ने सिक्खों के ख़िलाफ़ पूरा ज़हर उगला। एक भारतीय अंग्रेज़ी ख़बरिया चैनल सिक्ख-विरोधी एकतरफा सोच वाले तीन-चार प्रतिभागी बैठा कर बहस करवा रहा था। चैनल पर एक तरफ़ लगातार दसतारधारी सिक्खों की वीडियो दिखाई जा रही थीं। वे सभी लोग बार-बार जो शब्द इस्तेमाल कर रहे थे, वे शब्द थे-- क्रिमिनल गैंग्स, स्ट्रीट वायलेंस, गैंग वायलेंस इनवोल्वड दोज़ आर, कम्युनिटी ऑफ गैंगस्टर्स, माफिया लाइक ऑपरेशन, नोटोरियस एक्टिविटी, कनाडा सेफ हैवन फॉर गैंगस्टर। इन शब्दों का प्रयोग करते हुए बार-बार टी. वी. चैनल पर सिक्ख चेहरे दिखाए जा रहे थे। इन ख़बरिया चैनल वालों की मानसिक अभिवृत्ति लोगों को यह बताने की थी कि सिक्ख अपराधी गिरोह हैं। ये सड़कों पर हिंसा करते हैं। ये लोग आपराधिक गतिविधियों में शामिल हैं। सिक्ख अपराधी भाईचारा है, ये लोग माफिया की भांति कार्यवाही करते हैं। ये बदनाम गतिविधियों में शामिल हैं, कनाडा (सिक्ख) गैगस्टरों के लिए सुरक्षित पनाहगाह है . . . आदि।

यह सारा घटनाक्रम सिक्ख मानसिकता को पीड़ा पहुँचाने वाला था। ऐसा दृश्य लगभग पूरे भारतीय विद्युत मीडिया पर लगातार चलाया जा रहा था। यह सभी सिक्खों की किरदारकुशी करने के लिए स्टेट की

सुनियोजित साजिश का हिस्सा था।

यू. एन. ओ. के चार्टर के अनुसार प्रत्येक कौम को अपना देश मांगने का अधिकार है। (...Right to Freely choose their sovereignty And International political status with no interference) इसके अनुसार किसी धर्म, कौम, जाति को अलग देश की माँग करने पर आतंकवादी कहना सरासर गलत है, क्योंकि यह किसी भी धर्म-कौम-जाति का अधिकार है। देश में इनकी आतंकवादी, सत्यवादी की अपनी परिभाषाएं हैं। ये लोग जिसे चाहें, आतंकवादी का फ़तवा जारी कर सकते हैं। यदि अपनी अधिकारिक माँग उठाते हुए किसी अलग मुल्क (देश) की माँग करना आतंकवाद है तो किसी बहु-धर्मी , बहु-सांस्कृतिक देश में किसी एक धर्म के नाम पर राष्ट्र की माँग करने वाले भी आतंकवादी हैं। इस देश में एक वर्ग बेकसूर लोगों के गले में टायर डाल कर जलाए, देश की जायदाद-रेलें-बसें जला दे, शहरों के शहर (मणिपुर की तरह) आग लगा कर जला दे, लोगों की बेटियों-बहनों की इज्जत मिट्टी में मिला दे, फिर भी वो सत्यवादी ही रहते है। दूसरी तरफ़ जिन्होंने देश की ख़ातिर अनगिनत कुर्बानियां की हों, उन्हें मुल्क में आतंकवादी, अलगाववादी-एलान किया जाता है।

बात यदि भारतीय फ़िल्म उद्योग की करें तो लंबे अरसे से भारतीय फिल्मों में सिक्खों को मज़ाक का पात्र बना कर पेश किया जाता रहा है, जिसका समय-समय पर विरोध भी होता रहा है। एक सर्वेक्षण के अनुसार पिछले लगभग आठ-नौ वर्ष से और खासकर किसान आंदोलन की सफलता के बाद बालीवुड और कोलीवुड (तमिल की फिल्मों) में सिक्खों की किरदारकुशी करने का रुझान बढ़ा है। इन फिल्मों के माध्यम से सिक्खी किरदार की ख़ूबियों को चुन कर उन्हें धुंधला करने की कोशिश की जा रही है। इस तथ्य को संसार जानता है कि भारतीय फ़ौज में सिक्खों ने बे-मिसाल बहादुरी दिखाई है। १९६१, १९६५ और १९७१ ई. की जंग में आगे बढ़ कर सिक्ख फौजियों/ जरनैलों ने देश की आबरू को बचाया है। पाकिस्तान की फ़ौज ने भी एक सिक्ख जरनैल के आगे घुटने टेक दिए थे। सिक्ख किरदारकुशी करने की मंशा के साथ बनाईं जा रही भारतीय फ़िल्मों में से एक फ़िल्म में एक दृश्य दिखाया गया कि एक सिक्ख फ़ौजी का पैर माईन (बारूद) पर रखा जाता है। पैर के नीचे माईन देख कर सिक्ख फ़ौजी का पेशाब निकल जाता है। किसी कारण वह हाथ का प्रयोग नहीं कर सकने के कारण उनकी पैंट गीली हो जाती है। ऐसा दृश्य देख कर जब सिनेमा हाल में तालियों की गूँज सुनाई देती है तो सच्चाई को

शर्मसार होना पड़ता है। प्रश्न पैदा होता है कि ऐसे दृश्य फिल्माने के लिए सिक्ख किरदार का ही चयन क्यों और किसके कहने पर?

पहले शायद तामिल फिल्में इस नफरती घटनाक्रम से अछूती रही हों मगर पिछले कुछ वर्षों से तमिल फिल्मों में भी लगातार सिक्ख किरदारकुशी करने की मंशा से सिक्खों को डरपोक और गद्दार वाले किरदार में पेश किया जा रहा है। इन्हें मालूम है कि सिक्खों ने हमारे बहुत-से ऐतिहासिक पात्रों की तरह कभी देश के साथ गद्दारी नहीं की, हम क्यों न फिल्मों के माध्यम से सिक्ख चेहरों पर गद्दार होने का धब्बा लगा दें। उदाहरण के तौर पर इनकी फ़िल्म इंडस्ट्री द्वारा बनवाई एक फ़िल्म में चार-पाँच एन. आई. ए. (नेशनल इन्वेस्टिगेशन एजेंसी) के आफिसर (कलाकार) किसी आतंकवादी ग्रुप के विरुद्ध एक्शन करते हैं, जिसमें एक एन. आई. ए. का पगड़ीधारी सिक्ख आफिसर भी है। वो सिक्ख आफिसर अपनी टीम के साथ गद्दारी कर आतंकवादियों का साथ देता दिखाया गया है। एक अन्य फ़िल्म में एक जज के सुरक्षा दस्ते में एक सिक्ख आफिसर है जो आतंकवादियों के साथ मिल कर जज को मारने की योजना में शामिल होता है। फिर सवाल खड़ा होता है कि ऐसे दृश्य फिल्माने के लिए सिक्ख चेहरे ही क्यों और किस के कहने पर? ये तो केवल एक-दो उदाहरणें हैं। ऐसे और बहुत-से दृश्य भारतीय फिल्मों में सिक्खों की किरदारकुशी करने की मंशा के साथ फिल्माए जा रहे हैं, जो कि सिक्ख कौम के लिए बड़ा गंभीर मसला है। यह कोई स्वाभाविक घटनाक्रम नहीं, यह सिक्ख पंथ के लिए चुन्नौती है। फ़िल्मों को देश के अंदर करोड़ों लोग देखते हैं। इसलिए भारत में योजनाबद्ध ढंग के साथ सिक्खों की किरदारकुशी करने के लिए भारतीय फ़िल्मों का सहारा लेना बहुत बुरी बात है। भारतीय मीडिया और भारतीय फिल्मों के माध्यम से हो रही सिक्खों की किरदारकुशी को रोकने के लिए सिक्ख संस्थाओं, सिक्ख बुद्धिजीवियों, सिक्ख कानूनदानों को मिल कर सख़्त फ़ैसले लेने की ज़रूरत है। बालीवुड, कोलीवुड आदि फिल्मों के सैंसर बोर्ड में सिक्ख बुद्धिजीवी शामिल किए जाने चाहिए ताकि सिक्खों के साथ की जा रही ऐसी घिनौनी हरकतों को रोका जा सके।

धनु धंनु गुरू नानकु समदरसी . . .

*-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

गुरु नानक साहिब का जीवन ऐतिहासिक ज्ञान-अर्जन का नहीं आत्मिक प्रतीति का विषय है। कलियुग में सर्वाधिक मूल्यवान और अलभ्य वस्तु सुख है। मनुष्य की सबसे बड़ी कामना सुख की है। सुख न तो बाजार में क्रय किया जा सकता है, न किसी से दान में प्राप्त किया जा सकता है। सुख उत्पन्न और संचित भी नहीं किया जा सकता। सुख के नाम पर बाजार में पदार्थ हैं, समाज और राज्य में सत्ता है, कुल और वंश है, किन्तु सुख का एहसास नहीं, जिससे घर भर सके। पदार्थ, समाज और कुल सुविधा दे सकते हैं, सुख नहीं। जो आत्मिक प्रफुल्लता प्रदान करे, वह सुख है। गुरु नानक साहिब का जीवन आत्मिक प्रफुल्लता का प्रबल स्रोत है। गुरु नानक साहिब का सांसारिक जीवन-काल मानव इतिहास का आनंद-काल था। राय भोय की तलवंडी में महिता कलिआण दास जी के घर जन्म लेते ही प्रथम दर्शन दाई दौलतां ने किया। उसने अब तक अनेकानेक प्रसव कराये थे और मुंह मांगे उपहार प्राप्त करती रही थी, मगर यह प्रथम अवसर था जब वह एक अव्यक्त आनंद से भर गई और धन- पदार्थ मांगने की इच्छा ही न रही। गुरु नानक साहिब की दृष्टि ने निहाल कर दिया। यह क्रम गुरु साहिब के सांसारिक जीवन के प्रथम क्षण से आरंभ हुआ और अंतिम क्षण तक अपना कौतुक दिखाता रहा। पूरे जीवन-काल में जो भी मिला वह गुरु साहिब का हो गया। वह इसलिये गुरु साहिब का हो गया क्योंकि हर किसी पर गुरु साहिब ने एक समान कृपा-दृष्टि डाली। गुरु साहिब की विलक्षण कृपा-दृष्टि ने ही उनकी स्वीकार्यता समाज में स्थापित की।

अंतरि देखि सबदि मनु मानिआ
अवरु न रांगनहारा ।।
अहिनिसि जीआ देखि समाले
तिस ही की सरकारा ।। *(पन्ना १३३१)*

गुरु नानक साहिब का दर्शन मन को रंग देने वाला था। उनकी बाणी मन को तरंगित कर देती है। संसार को विश्वास हो गया कि गुरु साहिब ही सच्चे तारणहार और प्रतिपालक हैं। लाखों लोग उनके अनुयाई हो गये। जाति, वर्ण, धर्म, धनी-निर्धन, निर्बल-बलवान, ज्ञानी-अज्ञानी आदि-आदि अगण्य भेदभावों से दूषित हो चुकी सामाजिक सोच के लिये गुरु नानक साहिब की दृष्टि अमृत की गंगा बन कर प्रस्फुटित हुई। गुरु नानक साहिब को राह में साधु-संत मिले तो उन्होंने उनकी भूख देख कर व्यापार के लिये पिता जी से मिले बीस रुपये खर्च कर दिये। गुरु

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३, ८४९७८-५२८९९*

साहिब ने उन्हें भोजन छकाने से पूर्व किरत (परिश्रम) कर पेट पालने का उपदेश दिया, और भूखे रहना, मांग कर खाना गलत कहा। श्री गुरु नानक साहिब ने भाई मरदाना जी को अपना संगी बनाया तो भाई मरदाना जी की सरलता और तन्मयता देखी। वे धर्म-यात्रा के दौरान भाई लालो जी के घर रुके तो उनकी ईमानदारी और कर्मठता से प्रभावित होकर। शेख सज्जन जैसे मिले, कौडा राक्षस व वली कंधारी जैसे मिले, गुरु नानक साहिब ने सभी का उद्धार किया। बारह वर्ष के एक बालक की भावना का भी गुरु नानक साहिब की दृष्टि में सम्मान था, जिसे समय आने पर बाबा बुड्ढा जी के रूप में गुरु साहिबान को गुरुता पद पर विराजमान कराने की जिम्मेदारी निभाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनकी कृपा-दृष्टि ने तलवंडी के जमींदार राय बुलार के हृदय को भी ऐसा प्रकाशित किया कि वे वृद्धावस्था में भी गुरु साहिब के दर्शन को लालायित रहते थे। सिद्धों ने जब गुरु नानक साहिब से उनके मिशन के बारे में पूछा तो गुरु साहिब ने अति सरल उत्तर दिया था- ''साच वखर के हम वणजारे॥'' उन्होंने कहा कि वे सच प्रकट कर रहे हैं जो कलियुग में मनुष्य के उद्धार का मार्ग है। गुरु नानक साहिब ने सच को व्यापक अर्थ प्रदान किये और मानव जीवन से जोड़ कर उत्तम समाज की कल्पना की, जिसमें परमात्मा की सत्ता स्थापित हो। गुरु नानक साहिब के चिंतन से उपजा सच और समाज किसी वर्ग विशेष का नहीं, समूची मानवता का सच और समाज था। गुरु साहिब का सच शाश्वत सच था।

आदि सचु जुगादि सचु ।।
है भी सचु नानक होसी भी सचु ।। (पन्ना १)

गुरु नानक साहिब ने कहा कि संसार में सच एक ही है। सृष्टि के आदि से है, हर युग, काल में विद्यमान रहा है। वर्तमान काल और अनंत भविष्य काल में भी सच रहने वाला है। यह सच है-- परमात्मा, जो निराकार है, एकमेव भय और वैर रहित कर्ता है। वह काल से परे और स्व ऊर्जित है। परमात्मा ने ही सृष्टि रची और सृष्टि से पूर्व भी वह था। परमात्मा ने सृष्टि रची, जीव उत्पन्न किये। इस तरह परमात्मा का सम्पूर्ण सृष्टि, सभी जीवों से कर्ता और कृत का समान संबंध स्थापित हुआ। जीवों के संदर्भ में इसे गुरु नानक साहिब ने पिता और संतान के रूप में देखा। पिता सच स्वरूप है। उससे संतान के संबंध का आधार भी सच है। कलियुग में धर्म के मार्ग से भटके हुए मनुष्य के समक्ष चुनौती है कि वह सच कैसे धारण करे, जिससे परमात्मा उसे संतान के रूप में स्वीकार कर सके। गुरु नानक साहिब ने सच धारण करने की विधि बतायी।

धौलु धरमु दइआ का पूतु ।।
संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति ।।
जे को बुझै होवै सचिआरु ।।
धवलै उपरि केता भारु ।। (पन्ना ३)

पुरातन ग्रन्थों के अनुसार धरती को एक बैल ने अपने सींगों पर उठा रखा है। गुरु नानक साहिब ने कहा कि यह बैल नहीं धर्म है, जिसने

धरती को उठाया हुआ है। गुरु साहिब ने स्पष्ट किया कि धर्म, दया का पुत्र है। धर्म ने धरती को अपने संतोष, धैर्य, संयम के बल पर अति कुशलता से संभाला हुआ है। इस धरती पर कितना अधर्म है, पाप है, फिर भी धर्म कभी विचलित नहीं हुआ है। गुरु साहिब ने कहा कि यही सच है, जिसे धारण कर मनुष्य परमात्मा से संबंध स्थापित कर सकता है। यह धर्म और सच का सबसे सुंदर सार था, जो गुरु नानक साहिब ने प्रदान किया। धर्म के बारे में अनेक भ्रांतियां थीं। कर्मकांड और पाखंड ने धर्म के स्वरूप को विकृत कर दिया था। समाज में भेदभाव उत्पन्न हो गये थे। निर्बल का अपमान और शोषण हो रहा था। भेदभाव के दो मुख्य वर्ग थे। पहला वर्ग था-- अवस्था और दूसरा वर्ग था-- अधिकार। अवस्था में वैयक्तिक उपलब्धियां, जैसे जाति, कुल, बल, परंपरागत स्वीकार्यता आदि सम्मिलित थे। अधिकार में कर्मों की श्रेष्ठता, निकृष्टता के आधार पर विभाजन था। गुरु नानक साहिब ने सभी का भरपूर खंडन कर उन्हें मिथ्या बताया। गुरु साहिब ने कहा कि मनुष्य का स्वयं का कुछ नहीं है, जिस पर वह गर्व कर सके। सभी कुछ जो मनुष्य के पास है, वह परमात्मा का दिया हुआ है और मनुष्य को परमात्मा की कृपा से प्राप्त हुआ है। परमात्मा जब देता है तो कृपा करता है क्योंकि वह दाता और दयालु एक साथ है। मनुष्य की सच्ची उपलब्धि और प्रतिष्ठा उसके धर्मानुकूल होने में है यदि वह धर्मानुकूल नहीं है, अंततः उपलब्धि और प्रतिष्ठा अर्थहीन सिद्ध होती है :

जे तिसु नदरि न आवई त वात न पुछै के।।

(पन्ना २)

परमात्मा सच स्वरूप है और सच में ही व्यक्त है। जाति, वर्ण, कुल, गोत्र आदि मनुष्य की अपनी रचना है। यह सब परमात्मा प्रदत्त नहीं है, इसलिये सच नहीं है। धन, सम्पदा, प्रतिष्ठा का अहंकार भी परमात्मा का दिया हुआ नहीं है, इसलिये मिथ्या है। इसका मनुष्य को कोई लाभ नहीं मिलता है।

गुरु नानक साहिब ने कहा कि कर्म भी वही भला और हितकारी है जो परमात्मा को भाता है :

जो तुधु भावै साई भली कार ।। *(पन्ना ३)*

गुरु नानक साहिब ने कहा कि परमात्मा ने विशाल सृष्टि की रचना की और दया, धर्म, संतोष, संयम आदि गुणों को धरती का आधार बनाया। इस धरती पर उनका ही आदर है जो एक परमात्मा को अपना स्वामी मान कर उसकी रची व्यवस्था के अधीन जीवन व्यतीत करते हैं। गुरु साहिब ने कहा कि संसार में अनेक धार्मिक लोग हैं जो अपने-अपने ज्ञान के अनुसार भक्ति के अलग-अलग ढंग अपना रहे हैं, किन्तु धर्म वही है जो परमात्मा को स्वीकार है। इसके बाद गुरु साहिब ने धर्म से विमुख लोगों का उल्लेख किया, जो जुल्म, ठगी, पाप, निंदा और अन्य निकृष्ट कार्य करते हुए जीवन व्यतीत कर रहे हैं। पाप और अधर्म की व्याख्या भी वही है जो परमात्मा की दृष्टि मे निरूपित है। परमात्मा ने सृष्टि में कितने ही लोक बनाये, जिनकी गणना संभव

नहीं है। संसार में उसने अनंत ज्ञान प्रकट किया, किन्तु यह ज्ञान उसी को प्राप्त हो रहा है जिसे परमात्मा प्रदान कर रहा है। संसार की प्रत्येक रचना में वह स्वयं विद्यमान है और अपनी सत्ता को प्रकट कर रहा है। सार यह कि सच और झूठ, हित और अहित का मापदंड परमात्मा तय करता है, मनुष्य नहीं। मनुष्य का धर्म है कि वह परमात्मा के निर्धारित किये मापदंडों के अनुसार अपना जीवन जिये। यह दृष्टि पूरी मानवता को एक समान आधार प्रदान करती है और उनके हितों को एकरूप करती है :

सभि जीअ तुमारे जी तूं जीआ का दातारा।।
हरि धिआवहु संतहु जी
सभि दूख विसारणहारा।। *(पन्ना ३४८)*

गुरु नानक साहिब ने तत्कालीन परिदृश्य के विपरीत अपनी पूजा नहीं करायी, किसी कर्मकांड और पाखंड से नहीं जोड़ा। यह समाज में विभाजन और भेदभाव को समाप्त करने का एक बड़ा कदम था। अपने कोटि-कोटि अनुयाइयों को गुरु साहिब ने परमात्मा के साथ जुड़ने के लिये वैचारिक और कार्यकारी दृष्टि प्रदान की, जो समस्त जीवों का स्वामी और दाता है और जो सभी के दुख दूर करने वाला है। सभी जीव उसके अपने हैं और वह अपने जीवों पर समान रूप से दया कर उनके हितों की रक्षा करता है। समाज का दुख इस सच को न पहचानने के कारण था। सच से दूर मनुष्य को अपने जीवन के प्रति भ्रम था, संसार के प्रति भ्रम था और परमात्मा के प्रति भी भ्रम था। मनुष्य जीवन ऐसे जी रहा था जैसे वह अमरत्व प्राप्त कर संसार में आया है। गुरु साहिब ने कहा कि ''हम आदमी हां इक दमी मुहलति मुहतु न जाणा॥'' किसी भी मनुष्य को ज्ञात नहीं कि उसका जीवन कितना है; अगले पल का भी ज्ञान नहीं है। मनुष्य इतनी निरीह स्थिति में है तो वह किस बात पर अहंकार कर सकता है! मनुष्य अपने जीवन की सफलता धन-अर्जन, संपत्ति, पद-प्रतिष्ठा, बल आदि में समझ रहा था। गुरु नानक साहिब ने कहा कि ऐसे लोग तो मृतक समान हैं- '' सो जीविआ जिसु मनि वसिआ सोइ ॥ नानक अवरु न जीवै कोइ॥''

जीवन परमात्मा की भक्ति हेतु प्राप्त हुआ है। परमात्मा की भक्ति और परमात्मा की शरण ही जीवन का उद्देश्य और लक्षण है। गुरु साहिब ने संसार के मोह से उबारा।

मोहु कुटंबु मोहु सभ कार ।।
मोहु तुम तजहु सगल वेकार ।।१ ।।
मोहु अरु भरमु तजहु तुम बीर ।।
साचु नामु रिदे रवै सरीर।।१ ।। *(पन्ना ३५६)*

मनुष्य अपने परिवार को ही संसार मान कर उसके मोह में लिप्त हो जाता है। वह स्वयं को परिवार का कर्ता होने का भ्रम पाल कर अपने जीवन का उद्देश्य बना लेता है। इससे उसके अंदर द्वैत-भाव जन्म लेता है जो उसे परमात्मा से दूर कर देता है। उसके अंदर विकार प्रबल हो जाते हैं। गुरु नानक साहिब ने इसे निरर्थक कहा। गुरु साहिब ने कहा कि परमात्मा का नाम मन में बसने में ही तन की सार्थकता है। तन और मन

परमात्मा का है। जीवन परमात्मा के अधीन है।

नानकु बिनवै तिसै सरेवहु जा के जीअ पराणा।।

(पन्ना ६६०)

सभी का जीवन परमात्मा के अधीन है। जीव परमात्मा की आज्ञा से ही जन्म लेता है और उसकी आज्ञा से ही संसार से विदा हो जाता है। मनुष्य जब इस सच को जान जाता है और परमात्मा को समर्पित हो जाता है, अन्य किसी भी सांसारिक शक्ति के प्रति उसका भ्रम दूर हो जाता है। एकमात्र परमात्मा में उसका विश्वास दृढ़ होने लगता है– ''सहु मेरा एकु दूजा नही कोई॥'' गुरु नानक साहिब ने संसार को एकात्म का संदेश प्रदान किया, जो अति महत्वपूर्ण और युगांतरकारी सिद्ध हुआ। एक परमात्मा पर विश्वास समाज को एक करने का आधार बना। परमात्मा की कृपा को पाने का भी एक ही मार्ग गुरु नानक साहिब ने बताया :

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ।।
सिरु धरि तली गली मेरी आउ।।

(पन्ना १४१२)

गुरु नानक साहिब ने कहा कि उनका एक ही मार्ग है–– प्रेम का। परमात्मा को मात्र प्रेम-भावना से ही पाया जा सकता है। परमात्मा की शरण, भक्ति, कृपा और जीवन-उद्देश्य की प्राप्ति के समस्त यत्नों में प्रेम का मुख्य तत्व होना ही सिक्ख होना है। प्रेम को गुरु नानक साहिब ने भक्ति की अवस्था के रूप में देखा। गुरसिक्ख परमात्मा के सेवक के रूप में अपनी सेवा का निर्वाह प्रेम-भावना से करता है। गुरसिक्ख परमात्मा को पति मान कर जीव-स्त्री का भाव धारण करता है तो उसका आधार भी प्रेम होता है। गुरु साहिब ने बलिदान की जो राह दिखाई वह भी प्रेम से ही प्रेरित थी। गुरु नानक साहिब ने परमात्मा का श्वास-श्वास सिमरन करने की प्रेरणा की, जो प्रेम-भावना के बिना संभव नहीं था। इसके लिये गुरु साहिब ने जल-कमल, मछली-जल, चातक-स्वाति बूंद, जल-दूध, चकवी-चंद्रमा आदि की प्रीति का उदाहरण दिया। मनुष्य का पल-पल परमात्मा से जुड़े रहना मनुष्य की आदर्श स्थिति है, जो समाज में समरसता उत्पन्न करती है। गुरु नानक साहिब से प्रभावित और प्रेरित होकर जो सिक्ख संगत बनी वह नाम जपने वाले और अहिनिशि परमात्मा के प्रेम में रमे रहने वालों की संगत थी। इस प्रेम-भाव ने सारे भेद मिटा दिये और मानव-मात्र होने को समानता का आधार बनाने का कार्य किया।

गुरु नानक साहिब की समदृष्टि वास्तव में उनकी प्रेम-दृष्टि थी, जिसने मानव समाज को जीवन की अतुल व्यवस्था प्रदान की। आज जब सम्पूर्ण जगत में भेदभाव, नफरत, हिंसा और भय की विकट परिस्थितियां बड़ी चुनौती बनी हुई हैं, निदान एकमात्र है–– गुरु नानक साहिब का प्रेम-पंथ, जो वैश्विक स्तर पर समाज को जोड़ सकता है, जैसे गुरु नानक साहिब ने अपनी तेईस वर्ष की धर्म-प्रचार-यात्राओं के दौरान पूरे भूभाग को जोड़ा था।

युग-प्रवर्तक श्री गुरु नानक देव जी

-स. सुरजीत सिंघ*

पाप की जंञ लै काबलहु धाइआ
जोरी मंगै दानु वे लालो।।
सरमु धरमु दुइ छपि खलोए
कूडु फिरै परधानु वे लालो।।(पन्ना ७२२)

ये पीड़ादायक उद्‌गार श्री गुरु नानक देव जी की पवित्र बाणी से हैं, जिसमें निर्दोष भारतीय जनमानस पर विदेशी मुगल आक्रान्ताओं द्वारा दर्शायी क्रूरता एवं अत्याचारों का लोमहर्षक वर्णन किया गया है। बाबर पाप की बारात (लुटेरों का गिरोह) लेकर काबुल से आया और बलपूर्वक निर्दोष भारतीय जनता का धन-माल-अस्मत लूटने लगा। भयवश सत्य, लाज-शर्म, धर्म-कर्म लुप्त होते गये और पाप व असत्य का बोलबाला सर्वत्र प्रकट होने लग गया। पापाचार को देख-सुन कर श्री गुरु नानक देव जी की पवित्र आत्मा कराह उठी और उन्होंने निर्भीकतापूर्वक बाबर के शासन को अत्याचारी शासन कह कर संबोधित किया। गुरु जी की तड़प बढ़ती ही चली गयी और शबद-प्रवाह चलने लगा :

खुरासान खसमाना कीआ
हिंदुसतानु डराइआ।।
आपै दोसु न देई करता
जमु करि मुगलु चड़ाइआ।।
एती मार पई कुरलाणे
तैं की दरदु न आइआ।। *(पन्ना ३६०)*

अर्थात् हे सृष्टि के कर्ता ईश्वर! जनमानस को इतनी मार पड़ रही है, इतने अत्याचार हो रहे हैं, मुगल शासक इनको यमदूत की भांति नोच रहे हैं और ये तड़प-तड़प कर कराह रहे हैं, किन्तु तुम्हें दया नहीं आ रही!

ऐसी विकट परिस्थितियों से उबारने के लिए गुरु जी ने राष्ट्र को सत्य-धर्म, मानव-धर्म एवं जीवन-धर्म का आध्यात्मिक, सांस्कृतिक प्रकाश प्रदान कर भय हित निष्ठा में जीवन-पथ का मार्ग प्रशस्त किया।

जनमानस में भावनात्मक एकता, समानता का संचार कर श्री गुरु नानक देव जी ने सांस्कृतिक जागरण-मंत्र फूंक, पवित्र धर्म-साधना की प्रेरणा देते हुए निर्भय होने की दीक्षा दी, जो कि समकालीन भारतीय समाज की सबसे बड़ी आवश्यकता और उपयोगिता थी। इस प्रकार गुरु जी की पवित्र बाणी का जनमानस पर अमृत-सा प्रभाव पड़ा, जिसने समस्त भारतीय दर्शन और धर्म-चिन्तन की सरलतम एवं संक्षिप्तम व्याख्या प्रस्तुत कर दी, जो मानवी भावना से परिपूर्ण होकर अभिनव जागरण का प्रतीक सिद्ध हुई।

भारतवर्ष में समृद्ध देश है। इसमें श्री गुरु

*५७बी, न्यू कालौनी गुमानपुरा कोटा, फोन : ०९४१३६-५१९१७

नानक देव जी का जीवन-काल सत्य की ज्योति को सदैव प्रज्वलित रखे हुए विश्व-इतिहास में धर्म एवं मानवीय मूल्यों, सिद्धांतों, आदर्शों की रक्षार्थ पूर्णरूपेण समर्पित रहा है। यह समय वो था, जब चारों ओर हाहाकार एवं त्राहि-त्राहि मची हुई थी, जन पुरुष के सम्मान को, स्त्री के सतीत्व को, मानव की मानवता को एवं न्याय के अधिकार को ही चकनाचूर एवं ध्वस्त करते हुए अधर्म व असत्य का जैसे प्रलय हो गया था।

विश्व-इतिहास में धर्म तथा मानवीय मूल्यों, सिद्धांतों एवं आदर्शों की अनुपालना और रक्षा ही गुरु जी के जीवन का मुख्य उद्देश्य था, इसीलिए आप सामाजिक, आध्यात्मिक और धार्मिक विशिष्टताओं के प्रतीक व मर्यादाओं के आदर्श माने जाते हैं। आप सर्वगुण-सम्पन्न थे। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पवित्र मधुर बाणी में सौम्यता, सादगी, सौजन्यता एवं वैराग्य की भावना कूट-कूट कर भरी हुई है, जिसमें धर्म के मार्ग, सत्य के मार्ग का ही अनुसरण है। सत्य की हमेशा विजय होती है।

गुरु जी ने वर्ण, जाति, सम्प्रदाय के भेदभाव को मिटाकर ''मानव-मानव एक समान'' का नारा देते हुए समता, समानता का ज्ञान दिया और साक्षात् शान्ति, क्षमा, सहनशीलता, प्रेम, एकता, भाईचारे का संदेश सत्यमूर्ति बनकर प्रतिपादित किया। संगत-पंगत के सिद्धांत को शुरु करके गुरु जी ने धार्मिक सहिष्णुता का पाठ पढ़ाया, जहां राजा-रंक, अमीर-गरीब, बड़े-छोटे सभी एक ही समय में, बिना भेदभाव के एक ही साथ, एक ही पंक्ति में बैठकर समानता का परिचय देते हैं।

मानवता की सेवा ईश्वर की सेवा के तुल्य है और जरूरतमंद, निराश्रित, गरीब, जो श्रम तो करते हैं, मगर आय कम होने की वजह से आजीविका चलाने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, को निःस्वार्थ-भाव से दिया दान ही ईश्वर की सेवा में अर्पित दान है। मानव के अमूल्य जीवन को सर्वोच्चता प्रदान करने के लिए गुरु जी ने कुछ नियम एवं सिद्धांत निश्चित किए हैं, जिनका सच्चे हृदय से अनुसरण कर मनुष्य ईश्वर की कृपा का पात्र बन सकता है। गुरु जी कहते हैं कि ''सत्य मार्ग पर चलना फलदायक है। झूठ बोलना पाप है। कभी किसी का दिल मत दुखाओ! चोरी करना अथवा चोरी करने का भाव रखना बुरा कर्म है। संयम में रहते हुए क्रोध नहीं करना चाहिए एवं क्रोध से दूर रहना चाहिए। अभिमानी मत बनो! अहंकार मनुष्य को जलाकर राख कर देता है। छल-कपट से दूर रहें और विचारों में कुटिलता मत लाएं! कोई छोटाया बड़ा नहीं है, क्योंकि ईश्वर का हर हृदय में समान रूप से बसेरा है। मनुष्य जन्म से नहीं, अपितु अपने किये हुए शुभ कर्मों से महान कहलाता है। जीओ और जीने दो! किसी का भी बुरा मत सोचो और न ही बुरा करो! समस्त मानव का भला सोचो! समस्त विश्व का कल्याण हो, भला हो! किसी को मत डराओ और किसी का अनायास ही दबाव भी मत सहो अर्थात् मत डरो! गुरु जी का उद्देश्य है-- सत्य के समान कोई कीर्ति नहीं, शील के समान कोई शृंगार नहीं, ज्ञान के समान कोई दान नहीं और दया के समान कोई धर्म नहीं।''

तउ परम गुरू नानक गुन गावउ

-डॉ. परमजीत कौर*

शांति के पुन्ज, विनम्रता की मूर्ति, अज्ञान का नाश करके हृदय में प्रेम तथा सत्य का प्रकाश करने वाले, श्री गुरु नानक देव जी का आगमन उस समय हुआ, जब चारों तरफ अधर्म, वैर-विरोध, वहम-भ्रम, झूठ-पाखण्ड, छुआ-छूत तथा पराधीनता की भावना का बोलबाला था। श्री गुरु नानक देव जी ने लोगों में जागृति पैदा करने के लिए सारे संसार में विचरण करते हुए चार उदासियाँ कीं तथा १९ रागों में बाणी उच्चारण कर अपनी मधुर बाणी तथा आलौकिक कार्यों से उनको अज्ञानता, अंधविश्वास तथा कर्मकाण्ड के जाल से मुक्त किया। भाई गुरदास जी के शब्दों में :

बाबे भेख बणाइआ उदासी की रीति चलाई।
चढ़िआ सोधणि धरति लुकाई।।

(वार ११ : २४)

श्री गुरु नानक देव जी के प्रकट होने पर एक नये युग का आरम्भ हुआ। परमात्मा को विस्मृत करके माया-मोह में ग्रस्त जीवों को श्री गुरु नानक देव जी सावधान कर रहे हैं :

तितु सरवरड़ै भईले निवासा
पाणी पावकु तिनहि कीआ।।
पंकजु मोह पगु नही चालै
हम देखा तह डूबीअले।।१।।
मन एकु न चेतसि मूड़ मना।।
हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ।।१।।रहाउ।।

(पन्ना ३५७)

विकारों से पूर्ण, कच्चे घड़े के समान इस शरीर का सहारा लेकर संसार समुद्र से पार निकलना कठिन है। परमात्मा का आश्रय लेकर ही इस दुर्गम घाटी को पार किया जा सकता है :

काची गागरि देह दुहेली
उपजै बिनसै दुखु पाई।।
इहु जगु सागरु दुतरु किउ तरीऐ
बिनु हरि गुर पारि न पाई।। *(पन्ना ३५५)*

गुरु साहिब समझा रहे हैं कि जब प्राण शरीर से निकल जाते हैं, तो दीन अवस्था हो जाती है, इन्द्रियाँ निर्बल हो जाती हैं, इसलिए यही समय है नाम-सिमरन करके प्रभु-मिलाप प्राप्त करने का :

सुणि मन मित्र पिआरिआ मिलु वेला है एह।।
जब लगु जोबनि सासु है तब लगु इहु तनु देह।।
बिनु गुण कामि न आवई ढहि ढेरी तनु खेह।।१।।
मेरे मन लै लाहा घरि जाहि।।
गुरमुखि नामु सलाहीऐ हउमै निवरी भाहि।।

(पन्ना २०)

*६२०, गली नं. १, छोटी लाईन, संतपुरा, यमुनानगर (हरियाणा)— १३५००१, फोन: ९८१२३-५८१८६

विषयों के रस में लिप्त मनुष्य प्रभु से दूर होता चला जाता है :

रसु सुइना रसु रुपा कामणि रसु परमल की वासु।।
रसु घोड़े रसु सेजा मंदर रसु मीठा रसु मासु।।
एते रस सरीर के कै घटि नाम निवासु।।

(पन्ना १५)

— जेता मोहु परीति सुआद।।
सभा कालख दागा दाग।।
दाग दोस मुहि चलिआ लाइ।।
दरगह बैसण नाही जाइ।। *(पन्ना ६६२)*

श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार विषय-रस में लिप्त होकर प्रभु के नाम को विस्मृत कर देने वाले जीव, मानों राख से भरी हुई बैलगाड़ी के समान हैं :

जिनी नामु विसारिआ से कितु आए संसारि।।
आगै पाछै सुखु नही गाडे लादे छारु।।

(पन्ना १०१०)

ऐसा जीव अज्ञानता के कारण यह नहीं समझता कि इस संसार में उसका निवास केवल मेहमान के समान है। उसका असल ठिकाना, उसका वास्तविक घर तो वह है, जहाँ उसने अन्ततः जाना है। वहाँ जाने के लिए, यात्रा के खर्च के लिए प्रभु के नाम का खजाना लेकर जाना है :

दुनीआ कैसि मुकामे।।
करि सिदकु करणी खरचु बाधहु
लागि रहु नामे।।१।।रहाउ।। *(पन्ना ६४)*

श्री गुरु नानक देव जी ने स्वयं गृहस्थ जीवन में रहते हुये निर्लिप्त रहकर नाम को जीवन का आधार बनाकर लोगों को जागृत किया है। आप समझा रहे हैं कि मान-सम्मान के साथ अपने असल घर जाने के लिए गृहस्थ में रहकर, अपने सारे कर्त्तव्यों को पूरा करते हुये, माया से निर्लिप्त रहकर, नाम का सरमाया एकत्र करना जरूरी है। यदि माया से निर्लिप्त नहीं रहता तो मोह में ही फंसे रहकर जीवन व्यर्थ व्यतीत हो जाता है। जिस मनुष्य के अन्दर शोर मचाने वाले, भयंकर भूतों के समान कामादि शत्रु रहते हों, वे भूत अपनी-अपनी तरफ खींचते रहते हों, वह मनुष्य नाम में लीन नहीं रह सकता :

दुंदर दूत भूत भीहाले।।
खिंचोताणि करहि बेताले।।
सबद सुरति बिनु आवै जावै
पति खोई आवत जाता हे।।८।।
कूडु कलरु तनु भसमै ढेरी।।
बिनु नावै कैसी पति तेरी।। *(पन्ना १०३१)*

गुरु साहिब के मत में प्रभु के नाम के बिना पढ़ा हुआ, शास्त्रों का ज्ञाता भी असत्य का व्यापारी है। उसकी जिन्दगी की गलियों के रास्ते मानों तृष्णा की आग से रुके रहते हैं। उनमें से जाना कठिन हो जाता है। प्रभु मानों समुद्र है। विद्या, चतुराई आदि का सहारा लेकर उस अथाह समुद्र को नहीं जाना जा सकता :

पड़िआ लेखेदारु लेखा मंगीऐ।।
विणु नावै कूड़िआरु अउखा तंगीऐ।।
अउघट रुधे राह गलीआं रोकीआं।।

सचा वेपरवाहु सबदि संतोखीआं।।
गहिर गभीर अथाहु हाथ न लभई।।
मुहे मुहि चोटा खाहु विणु गुर कोइ न छुटसी।।
पति सेती घरि जाहु नामु वखाणीऐ।।
हुकमी साह गिराह देंदा जाणीऐ।।

(पन्ना १२८८)

जिनके हृदय में नाम नहीं बसता, वे गुणों से रहित, खोटे होते हैं। जैसे खोटे सिक्के सरकारी खजाने में नहीं चलते, वैसे ही खोटे मनुष्य प्रभु-दरगाह में आदर प्राप्त नहीं करते :

जिना रासि न सचु है किउ तिना सुखु होइ।।
खोटै वणजि वणंजिऐ मनु तनु खोटा होइ।।
फाही फाथे मिरग जिउ
दूखु घणो नित रोइ।।२।।
खोटे पोतै ना पवहि
तिन हरि गुर दरसु न होइ।।
खोटे जाति न पति है
खोटि न सीझसि कोइ।।
खोटे खोटु कमावणा
आइ गइआ पति खोइ।।

(पन्ना २२)

दुनिया का कोई सुख, कोई पदार्थ हृदय में बस रहे नाम के आनन्द की बराबरी नहीं कर सकता। प्रभु का नाम माया के मोह रूप अन्धकार में प्रकाश के समान है। यह जीवन को प्रकाशमयी कर देता है :

राज रूपु झूठा दिन चारि।।
नामु मिलै चानणु अंधिआरि।। (पन्ना ७९५)

वास्तव में इन्सानी जीवन के लिए दो ही ऋतुएं हैं-- नाम-सिमरन तथा नामहीनता । मनुष्य इनमें से जिस ऋतु के प्रभाव के अधीन जीवन व्यतीत करता है, उसके शरीर को वैसा ही सुख या दुख मिलता है। उस प्रभाव के अनुसार ही उसका शरीर चलता रहता है। ज्ञानेन्द्रियाँ बहिर्मुखी या अन्तर्मुखी हो जाती हैं। मनुष्य के लिए वही ऋत्तु सुन्दर है, जब वह नाम-सिमरन करता है। नाम-सिमरन के बिना कोई भी ऋतु कल्याणकारी नहीं होती :

जेही रुति काइआ सुखु तेहा तेहो जेही देही।।
नानक रुति सुहावी साई
बिनु नावै रुति केही।। *(पन्ना १२५४)*

श्री गुरु नानक देव जी विस्तार से समझा रहे हैं कि इस विकार भरे संसार में इन्सानी जीवन का समुचित मार्ग मानों एक बहुत ही तंग गली में से निकलता है, जहाँ बहुत सम्भल कर चलना पड़ता है। वह रास्ता मानों खण्डे की धार जैसा तीक्ष्ण है, जिसके ऊपर से चलते हुए यदि थोड़ा-सा भी डगमगा जायें तो विकारों के समुद्र में गिर सकते हैं। कृतकर्मों का हिसाब भी चुकाना पड़ता है। जब तक मन में विकारों के संस्कार हैं तब तक विकारों से मुक्ति नहीं मिलती। जैसे तिलों को कोल्हू में डालने पर ही तेल निकलता है, वैसे ही दुख के कोल्हू में पड़कर ही विकारों से मुक्ति मिलती है। इस दुख में माँ-बाप, पति-पत्नी, पुत्र, मित्र कोई भी सहायक नहीं हो सकता, परमात्मा के नाम-रस

की प्राप्ति ही सहायता करती है :

— खंडे धार गली अति भीड़ी ।।
लेखा लीजै तिल जिउ पीड़ी ।।
मात पिता कलत्र सुत बेली नाही
बिनु हरि रस मुकति न कीना हे ।।
(पन्ना १०२८)

— विणु नावै को संगि न साथी
आवै जाइ घनेरी ।।
नानक लाहा लै घरि जाईऐ
साची सचु मति तेरी ।।२ ।।
साजन देसि विदेसीअड़े सानेहड़े देदी ।।
सारि समाले तिन सजणा मुंध नैण भरेदी ।।
मुंध नैण भरेदी गुण सारेदी
किउ प्रभ मिला पिआरे ।।
मारगु पंथु न जाणउ विखड़ा
किउ पाईऐ पिरु पारे ।। (पन्ना ११११)

गुरु साहिब समझा रहे हैं कि परलोक को संवारने के लिए इस लोक में प्रतिदिन के कार्यों की ओर ध्यान देना चाहिए। हृदय में प्रभु-प्रेम को पैदा करने के लिए शुभ कार्यों से अपने को संवारना बहुत जरूरी है। अपने अन्दर से अवगुणों को निकालकर गुणों के धारक बनकर ही परमात्मा का सामीप्य प्राप्त किया जा सकता है। गुरु जी ने नैतिक-गुणों को बहुत महत्व दिया है। सत्य, संतोष, सहनशीलता, विनम्रता, परोपकार की भावना, किसी का बुरा न करना, मधुर बोलना आदि गुणों को धारण करने से माया की जंजीरों से छूटने का मार्ग आसान हो जाता है :

— सतु संतोखु करि भाउ तोसा हरि नामु सेइ ।।
मनहु छोडि विकार सचा सचु देइ ।।
(पन्ना ४२१)

— राहु बुरा भीहावला सर डूगर असगाह ।।
मै तनि अवगण झुरि मुई
विणु गुण किउ घरि जाह ।। (पन्ना ९३६)

अच्छे कर्मों के साथ-साथ गुरु-शबद में ध्यान लगाना तथा गुरमति के अनुसार जीवन बनाना भी जरूरी है। जब तक जीव गुरु-शबद को हृदय में बसाने की कमाई नहीं करता, कोई जप, तप तथा अन्य कोई उद्यम उसकी सहायता नहीं करता।

जब मनुष्य विषय-विकारों को हृदय रूप धरती में से ऐसे निकाल देता है जैसे फसल में से खरपतवार तथा एकाग्रचित्त होकर प्रभु का सिमरन करता है तो जप, तप, संयम उसके आत्मिक जीवन के रक्षक बन जाते हैं :

बिखै बिकार दुसट किरखा करे
इन तजि आतमै होइ धिआई ।।
जपु तपु संजमु होहि जब राखे
कमलु बिगसै मधु आस्रमाई ।। (पन्ना २३)

नाम को अन्दर बसाने के लिए अमृत वेला श्रेष्ठ माना गया है-- *''अंम्रित वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु ।।''*

श्री गुरु नानक देव जी नाम बोने के ढंग बता रहे हैं :

इहु तनु धरती बीजु करमा करो
सलिल आपाउ सारिंगपाणी ।।

मनु किरसाणु हरि रिदै जंमाइ लै
इउ पावसि पदु निरबाणी।।...
अमलु करि धरती बीजु सबदो करि
सच की आब नित देहि पाणी।।
होइ किरसाणु ईमानु जंमाइ लै
भिसतु दोजकु मूड़े एव जाणी।। (पन्ना २३)

यदि गुरमति के अनुसार जीवन बना लिया जाये तो प्रभु का गुण-कीर्तन करने से, नाम जपने से हउमै (अहं) दूर हो जाती है, मन स्थिर हो जाता है, प्रभु हृदय-घर में ही मिल जाता है :

भूली भूली मै फिरी पाधरु कहै न कोइ।।
पूछहु जाइ सिआणिआ दुखु काटै मेरा कोइ।।
सतिगुरु साचा मनि वसै साजनु उत ही ठाइ।।
नानक मनु त्रिपतासीऐ सिफती साचै नाइ।।
(पन्ना १०८७)

वही जीव नाम जप सकते हैं, जिन पर प्रभु की कृपा होती है। परमात्मा उसी जीव पर कृपा करता है जो उसे प्रिय लगता है। श्री गुरु नानक देव जी के मत में जीव अकाल पुरख को अंदर-बाहर, प्रत्येक स्थान, प्रत्येक शरीर में व्यापक देखता है, निंदा-चुंगली, ईर्ष्या-द्वेष नहीं करता, सदैव सत्य के मार्ग पर चलता है, वही परमात्मा को अच्छा लगता है :

गुर कै संगि रहै दिनु राती
रामु रसनि रंगि राता।।
अवरु न जाणसि सबदु पछाणसि
अंतरि जाणि पछाता।।१ ।।
सो जनु ऐसा मै मनि भावै।।
आपु मारि अपरंपरि राता
गुर की कार कमावै।।१ ।।रहाउ ।।
अंतरि बाहरि पुरखु निरंजनु
आदि पुरखु आदेसो।।
घट घट अंतरि सरब निरंतरि
रवि रहिआ सचु वेसो।।२ ।।
साचि रते सचु अंम्रितु जिहवा
मिथिआ मैलु न राई।।
निरमल नामु अंम्रित रसु चाखिआ
सबदि रते पति पाई।। (पन्ना ११२६)

भट्ट कल्य जी श्री गुरु नीनक देव जी की स्तुति कर रहे हैं :

— गावउ गुन परम गुरू सुख सागर
दुरत निवारण सबद सरे।।
गावहि गंभीर धीर मति सागर
जोगी जंगम धिआनु धरे।।... (पन्ना १२८६)
— कबि कल सुजसु गावउ
गुर नानक राजु जोगु जिनि माणिओ।।
(पन्ना १३८९)
राजु जोगु माणिओ बसिओ निरवैरु रिदंतरि।।
स्रिसटि सगल उधरी नामि ले तरिओ निरंतरि।।
(पन्ना १३८९)

श्री गुरु नानक देव जी

*-श्री रमेश बग्गा चोहला**

सिक्ख धर्म बाकी सब धर्मों से नूतन होने के कारण आधुनिकता के अधिक निकट है। इसके संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी ने सिक्खों को जो आध्यात्मिक विचारधारा प्रदान की वो। मानवता की कद्रदान तथा सरबत्त के भले की समर्थक होने के कारण मात्र हिंदुस्तान तक ही सीमत नहीं, बल्कि पूरे विश्व के लिए थी।

सिक्ख धर्म के संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी ने १४६९ ई. में वर्तमान पाकिस्तान के गांव राय भोय दी तलवंडी में भाई कलिआण दास उर्फ महिता कालू जी (पटवारी) तथा माता त्रिपता जी के घर जन्म (प्रकाश) लिया। इस लोकप्रिय गांव को अब श्री ननकाणा साहिब कहा जाता है, जो लाहौर की दक्षिण दिशा में लाहौर से लगभग ४८ मील की दूरी पर स्थित है। जिस काल में श्री गुरु नानक देव जी का आगमन हुआ वह दुनिया के धार्मिक इतिहास में बहुत ही अहम काल था। यह समय कला, साहित्य तथा ज्ञान के दोबारा स्थापित होने का समय था।

दुनियावी शिक्षा हासिल करने के लिए श्री गुरु नानक देव जी गोपाल पंडित तथा मौलवी कुतुबुद्दीन के पास गए। आप जी ने उपरोक्त शिक्षाविदों से जहां संसारी शिक्षा ग्रहण की, वहीं उन्हें इलाही ज्ञान का पाठ भी पढ़ाया। अपने सहपाठियों को भी सत्य (परमात्मा) की शिक्षा के साथ जोड़ा। भाई राय बुलार गुरु साहिब के जीवन से इतना प्रभावित हुए कि उनका नाम गुरु जी के प्रथम सिक्खों में शामिल है।

कुछ समय बाद श्री गुरु नानक देव जी अपनी बहन के घर सुलतानपुर लोधी आ गए। सुलतानपुर में आप नवाब दौलत खान लोधी के मोदी बन गए। यहां वे मोदीखाने में राशन लेने आए लोगों को राशन तौल कर देते थे। इसी मोदीखाने की नौकरी के साथ ही 'तेरा-तेरा' का उपदेश जुड़ा हुआ है।

श्री गुरु नानक देव जी का विवाह बटाला शहर के निवासी श्री मूल चंद की पुत्री माता सुलक्खणी जी के साथ हुआ। आप जी के घर बाबा श्रीचंद जी एवं बाबा लखमी दास जी

* १३४८/१७/१, गली नंबर ८, हैवोवाल खुर्द (लुधियाना) मो : ९४६३१-३२७१९

पैदा हुए।

यहीं पर श्री गुरु नानक देव जी ने जातीय भेदभाव में ग्रसित जनता को नवीन नारा-- 'न कोई हिन्दू, न मुसलमान' दिया। मानवता को उबारने वाले इस नारे की खूब चर्चा हुई, मगर यह चर्चा उस वक्त के धर्मांध मनुष्यों को हज़म न हो सकी। उन्होंने गुरु साहिब की क्रांतिकारी सोच का विरोध किया, मगर जीत आखिर सत्य की ही हुई। अपने क्रांतिकारी विचारों को दुनिया के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों तक पहुंचाने के लिए गुरु जी की ओर से कई प्रचार-यात्राएं भी की गईं, जिन्हें सिक्ख इतिहास में 'उदासियां' नाम से जाना जाता है। भाई मरदाना जी, जो मुसलमान मिरासी थे, गुरु साहिब के बहुत प्यारे मित्र थे। उदासीओं के दौरान बतौर रबाबी वे गुरु साहिब के साथ आजीवन रहे।

श्री गुरु नानक देव जी के आगमन से पूर्व भारत में वैदिक धर्म का बोलबाला था, जिसकी बुनियाद वर्ण आश्रम पर आधारित थी। भारतीय समाज जातियों तथा सम्प्रदायों की उलझन में उलझा हुआ था। मनुष्य की पहचान कर्म-आधारित न होकर जन्म-आधारित बन गई थी। लोगों में आपसी भाईचारे एवं एकसुरता की भावना पूरी तरह से आलोप हो चुकी थी।

ऐसी दयनीय दशा में परिवर्तन लाने के लिए श्री गुरु नानक देव जी भाई मरदाना जी को साथ लेकर देश-विदेश में गए। इस सफर में गुरु साहिब को वर्षों का समय लगा। श्री गुरु नानक देव जी को उस वक्त जनसाधारण के साथ हो रहे अन्याय तथा बेइंसाफी का इल्म था और मन में लोगों के लिए दर्द भी था। अपने जीवन के अंतिम समय में श्री गुरु नानक देव जी ने करतापुर साहिब को अपना निवास-स्थान बना लिया। करतारपुर साहिब रह कर गुरु जी कृषि-कार्य करने लगे। यहीं पर सन् १५३२ ई. में भाई लहिणा जी गुरु साहिब की सेवा में उपस्थित हुए और सात वर्ष की समर्पित सेवा के बाद श्री गुरु नानक देव जी के उत्तराधिकारी के रूप में द्वितीय गुरु श्री गुरु अंगद देव जी बन कर गुरुआई पर शोभित हुए। श्री गुरु नानक देव जी करतारपुर साहिब में १५३९ ई. में ज्योति-जोत समा गये।

बंदी छोड़ सतिगुरु : श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब

*–डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल**

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत के उपरान्त सिक्ख अति मुश्किल दौर से गुज़र रहे थे। महज ११ वर्ष की आयु में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब गुरुआई पर विराजमान हुए। इस कठिन समय में गुरु जी ने धैर्य के साथ सिक्खों का नेतृत्व किया। गुरु-पिता के शहीद होने की घटना ने उनके हृदय पर गहरा असर डाला। पत्थर-दिल जालिमों के अत्याचारों का मुकाबला करने के लिए 'वड जोधा बहु परउपकारी' श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने सिक्खों को एक पराक्रमी कौम बनाने का निश्चय कर लिया। गुरु साहिब ने स्वयं 'मीरी' और 'पीरी' (राजनीतिक शक्ति और धार्मिक शक्ति) की प्रतीक दो कृपाणों को धारण किया। सिक्खों को हथियारबंद कर दिया गया और घुड़सवारी, नेजाबाजी, तीरंदाजी, मल्ल अखाड़े जैसे वीर रसात्मक खेलों के माध्यम से सिक्खों को सैनिक प्रशिक्षण दिया जाने लगा। गुरु जी ने सिक्ख श्रद्धालुओं को भी हिदायत की कि वे कृपाणा, घोड़े, बरछे आदि लाकर भेंट करें। शीघ्र ही सिक्ख सेना की संख्या काफी बढ़ गई। गुरु जी ने सेना के लिए 'लोहगढ़' नामक किले का निर्माण करवाया। गुरु जी ने श्री हरिमंदर साहिब के सामने 'श्री अकाल तख्त साहिब' की स्थापना की और वहां विराजमान होकर सिक्खों में राजनीतिक चेतना का संचार करना आरंभ कर दिया।

गुरु साहिब की इन सैन्य और राजसी तैयारियों की ख़बर गुरु-घर के द्रोही चंदूशाह के माध्यम से बादशाह जहाँगीर तक पहुँची तो वह ईर्ष्या और क्रोध से आग बबूला हो उठा :

सुन जहाँगीर मन माहि रिसावै।
जतन करे कछु हाथ नाह आवै ।।

(महिमा प्रकाश)

जहाँगीर ने गुरु जी को आगरा आमंत्रित किया और धोखे से ग्वालियर के क़िले में क़ैद कर दिया। बहाना यह लगाया गया कि श्री गुरु अरजन देव जी वाला जुर्माना वसूल करना था, अत : उनके पुत्र को गिरफ़्तार किया गया है।

ग्वालियर के जिस क़िले में गुरु साहिब को रखा गया वहाँ पहले से ही कई हिंदू राजा भी क़ैद थे। ये ज़्यादातर वे राजा थे जिन्हें मुगल साम्राज्य से बगावत के आरोप में गिरफ़्तार किया गया था। ये राजा निहायत बुरी और दयनीय स्थिति में दिन गुज़ार रहे थे। जब उन्होंने छठम पातशाह को क़िले में देखा तो उनमें खुशी

**१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना, फोन : ६२३९६-०१६४१*

की लहर दौड़ गई। उनके मन में विश्वास पैदा हो गया कि अब उनका उद्धार गुरु साहिब के हाथों ही होगा :

वड़े लोग बंद तह रहैं।
सतिगुरु पास आन सब बहैं।।
जब लग दरसन प्रभु का करैं।
चिंता सोक दोखत पर हरैं। (महिमा प्रकाश)

गुरु जी ने जेल-कर्मचारियों के द्वारा लाया गया खाना खाने से इन्कार कर दिया। आप ग्वालियर शहर के एक परिश्रमी सिक्ख भाई हरिदास (दारोगा) के घर से आया भोजन करते। गुरु साहिब का कहना था :

श्रीमुख कहा किरत कर लिआवो।
सो भोजन हम को करवावो।।
(गुर बिलास पातशाही छेवीं)

गुरु जी जब तक ग्वालियर के किले में नजरबंद रहे उसी परिश्रमी सिक्ख हरिदास के घर से आने वाला खाना ही खाते रहे।

गुरु जी के ग्वालियर में कैद होने के कारण सिक्खों में आक्रोश बढ़ने लगा। बाबा बुड्ढा जी और भाई गुरदास जी के नेतृत्व में सिक्ख शांतिपूर्वक रोष-प्रदर्शन करते। कई जत्थे पंजाब से चलकर ग्वालियर पहुँचते, क़िले की दीवारों को माथा टेकते, परिक्रमा करते और वापस चले जाते :

दरां हंगामि ममंदा वसिखां मी रफतंद।
वा दीवारि किला रा सजदा मी करदंद।
(मुहसिन फानी)

गुरु जी को मुक्त कराने के लिए चलाया जा रहा आंदोलन धीरे-धीरे ज़ोर पकड़ता गया। जहाँगीर पर भी गुरु साहिब को रिहा करने का दबाव बढ़ता जा रहा था। कई इंसाफ-पसंद मुसलमानों ख़ास कर गुरु-परिवार के साथ स्नेह रखने वाले वज़ीर खान और साँई मियां मीर जी ने जहांगीर को समझाया और गुरु साहिब की रिहाई का हुक्म ले लिया। वास्तव में अब तक जहाँगीर की समझ में भी आ गया था कि सिक्खों के इस आंदोलन को ज़्यादा देर तक नहीं दबाया जा सकता, इसलिए श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को रिहा कर देना ही उचित है।

जब वजीर खान गुरु जी की रिहाई का हुक्म लेकर आगरा से ग्वालियर पहुंचा तो हुक्म सुनकर गुरु जी ने रिहा होने के लिए एक शर्त रख दी। उन्होंने कहा कि जब तक निर्दोष राजा भी नज़रबंदी से मुक्त नहीं किये जाते उन्हें भी मुक्ति नहीं चाहिये। वजीर खान फिर आगरा वापस आया और जहाँगीर को समझाने का प्रयत्न किया। पहले तो जहाँगीर अड़ियल बना रहा, लेकिन अंततः उसे बंदी राजाओं को भी रिहा करने की बात माननी पड़ी। उसने कहा कि जो राजा गुरु जी का दामन थाम कर बाहर आएगा, वही रिहा हो सकेगा :

जो दामन पकड़ गुर बाहर आवै।
सो भए खलास अपने घर जावै।
(महिमा प्रकाश)

कई स्थानों पर यह भी जिक्र है कि जहांगीर सभी ५२ राजाओं को रिहा करवाने के लिए भाई हरिदास ने गुरु जी के लिए एक ऐसा चोला सिलवाया जिसमें ५२ कलियाँ लगी हुई थीं। प्रत्येक कली को एक-एक राजा ने पकड़ा और किले से बाहर आकर मुक्त हो गये।

इस अभूतपूर्व कौतुक के पश्चात् गुरु जी 'बंदी छोड़ दाता' के रूप में प्रसिद्ध हो गये। ग्वालियर के क़िले से रिहा होकर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब दीवाली के दिन पंजाब श्री अमृतसर साहिब आए।

इस खुशी में रोशनी की गई थी। तब से यह परंपरा चली आ रही है और सिक्ख श्री हरिमंदर साहिब में दीवाली का पर्व 'बंदी छोड़ दिवस' के रूप में बड़े उत्साह से मनाते आ रहे हैं।

ग्वालियर के क़िले में जिस चबूतरे पर बैठ कर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब सुबह-शाम प्रभु-चिंतन-किया करते थे, उस स्थान पर 'बंदी छोड़ दाता' शब्द उकरे हुए हैं।

कविता

तमिल-कवि का गुरु-प्रेम

*-डॉ. नरेश**

१९वीं शताब्दी का प्रसिद्ध तमिल-भाषी कवि सुब्रह्मण्यम कभी पंजाब नहीं आया था, लेकिन उसे पंजाब की धरती के प्रति अद्भुत मोह था। उसे पंजाबियों की विशालहृदयता, शूरवीरता तथा सहृदयता सदैव लुभाती रही। पंजाब के प्रति अपने हृदय का प्रेम उडेलकर उसने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी पर एक कविता लिखी, जिसका काव्यात्मक भावानुवाद करके मैं यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ :

देशों में इक देश नाम, पंजाब है जिसका।
उस धरती की मैं भी, गाने लगा हूँ गाथा।
*उस धरती पर गुरु शिरोमणि गोबिंद सिंघ** ने,*
जात मिटाकर अपने हाथों सिंघ सजाए।
गुरु गोबिंद सिंघ कवि थे, ज्ञानी थे, धर्मोद्धारक।
महाप्रतापी विद्या-प्रेमी जन-कल्याणक।
खड्ग उठाकर गुरु जी ने भारत-गर्व बढ़ाया।
शीश उठाकर लोगों को जीना सिखलाया।
'वाहिगुरु जी की फतह' कहा और फौजें बढ़ गईं।
छाती पर औरंगजेब की जाकर चढ़ गईं।
नये धर्म का 'निशान' गुरु जी ने लहराया।
झुककर नभ 'निशान' को, चुम्बन देने आया।

*१६९, सेक्टर-१७, पंचकूला-१३४१०९, फोन : ९४१७३६५६७६
** श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी

इकु बाबा अकाल रूपु दूजा रबाबी मरदाना

-डॉ. मनजीत कौर*

सिक्ख धर्म के महान विद्वान भाई गुरदास जी की रचना को श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की कुंजी होने का खिताब पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने प्रदान किया। 'बगदाद-गमन' शीर्षक से लिखित उनकी वार की पउड़ी है :

फिरि बाबा गइआ बगदादि नो
बाहरि जाइ कीआ असथाना।
इकु बाबा अकाल रूपु दूजा रबाबी मरदाना।
दिती बांगि निवाजि करि
सुंनि समानि होआ जहाना।
सुंन मुंनि नगरी भई देखि पीर भइआ हैराना।
वेखै धिआनु लगाइ करि
इकु फकीरु वडा मसताना।
पुछिआ फिरि कै दसतगीर
कउण फकीरु किस का घरिआना।
नानक कलि विचि आइआ
रबु फकीरु इको पहिचाना।
धरति आकास चहू दिसि जाना।।३५।।

(वार १:३५)

अर्थात् मक्के से चलकर श्री गुरु नानक देव जी बगदाद गए और नगर से बाहर जाकर डेरा लगाया। एक अकाल स्वरूप सतिगुरु जी और दूसरे रबाब बजाने वाले भाई मरदाना जी रबाबी थे।

अत: स्पष्ट है कि धुर की बाणी के उच्चारणकर्ता अकाल रूप श्री गुरु नानक देव जी और रबाबी भाई मरदाना जी का श्री गुरु नानक देव जी के साथ अनन्य सम्बन्ध है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सम्पूर्ण बाणी काव्य रूप में है और ३१ रागों में निर्धारित है, जिसे विशेष तरन्नुम में गायन किया जाता है। यह देन है महान दार्शनिक श्री गुरु नानक पातशाह की, जिन्होंने बाणी को गायन करने की रीति प्रारम्भ की और सभी गुरु साहिबान ने इस रीति को कायम रखा। गुरबाणी का पावन फरमान है :

जिनी डिठा मेरा सतिगुरु भाउ
करि तिन के सभि पाप गवाई।।
हरि दरगह ते मुख उजले बहु सोभा पाई।।
जनु नानकु मंगै धूड़ि तिन
जो गुर के सिख मेरे भाई।।(पन्ना ३१०)

श्री गुरु रामदास जी का पावन फरमान है कि जिसने मेरे सच्चे गुरु का प्रेमपूर्वक दर्शन किया, उसके समस्त पाप समूल समाप्त हो गए हैं। ऐसे गुरु-प्यारों के मुख प्रभु-दरबार में उज्जवल होते हैं और उनकी महिमा का बहुत गायन होता है। दास (नानक) उनके चरणों की धूल मांगता है, जो गुरु के (सच्चे) सिक्ख हैं

*२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३

और मेरे भाई हैं।

इस संदर्भ में सिक्ख इतिहास का एक बहुत ही प्यारा नाम है-- भाई मरदाना जी, जिन्हें श्री गुरु नानक देव जी के साथ लम्बे समय तक उनके चरण-कमलों का भंवरा बन कर, उनका सखा बन कर, उनका भाई बन कर, उनका रबाबी बन कर, अपना लोक-परलोक सफल बनाने का स्वर्णिम व दुर्लभ अवसर प्राप्त हुआ। यह उनका श्री गुरु नानक पातशाह के प्रति समर्पण था, अनन्य प्रेम था, जिसकी बदौलत श्री गुरु नानक देव जी के मुखारबिंद से ये वचन सहसा ही निकले- ''जा मरदानिआ, तूं निहाल होया ! जित्थे साडा वासा, ओथे तेरा वासा !''

बाबा नानक पातशाह की ऐसी रहमतों के पात्र भाई मरदाना जी का जन्म १४५९ ई. में राय भोय की तलवंडी (अब पाकिस्तान) में हुआ। इनकी माता का नाम माता लक्खो जी तथा पिता का नाम भाई बदरा जी था। तथाकथित चौबड़ जाति के मुसलमान परिवार में जन्मे भाई मरदाना जी 'मीरासी डूम' कहलाते थे। इनका व्यवसाय सामाजिक परम्परा के अनुसार लोगों के मांगलिक अवसर पर नाचना और गाना होता था। उन परिवारों द्वारा इन्हें उपहार प्राप्त होते थे।

ऐसा माना जाता है कि ये अपने माता-पिता की सातवीं संतान थे। भाई मरदाना जी से पूर्व जिन छः बच्चों का जन्म हुआ वे अल्पायु में ही मृत्यु-ग्रस्त हो गए, अतः इनके माता-पिता ने भाई मरदाना जी का नाम कुछ इतिहासकारों के अनुसार 'मरजाणा' रखा, जिसका अर्थ बनता है वि इसने भी मर जाना है। लेकिन श्री गुरु नानक देव जी ने इनका नाम रखा-- 'मरदाना', जिसका अर्थ होता है-- 'मर-दा-ना' अर्थात् जिसकी मृत्यु न हो। इस संदर्भ में 'गुरमत ज्ञान' मई २०१३ में प्रकाशित स. सिमरजीत सिंघ जी का आलेख 'गुरबाणी के सबसे पहले संगीतकार : भाई मरदाना जी' के पृष्ठ १० पर उल्लेखित तथ्य यहां उल्लेखनीय हैं-- ''इनके माता-पिता ने इनका नाम 'दाना' रखा। भाई दाना जी मीरासियों की रबाबी भाईचारक श्रेणी से सम्बंध रखते थे। रबाब बजाना उन्होंने बचपन से ही शुरू कर दिया था। यही बच्चा बड़ा होकर प्रसिद्ध संगीत-शास्त्री तानसेन के उस्ताद हरिवल्लभ का पूजनीय उस्ताद बना।''

''जब श्री गुरु नानक देव जी अपनी बहन बेबे नानकी जी के पास आकर रहने लगे और भाई जैराम, जो कि नवाब दौलत खान लोधी के यहां सुलतानपुर लोधी में एक राजस्व अधिकारी के रूप में तैनात थे, उन्होंने श्री गुरु नानक देव जी को मोदीखाने में मोदी की नौकरी दिलवा दी। एक बार पिता कलिआण दास (महिता कालू जी) ने भाई बदरा जी को श्री गुरु नानक देव जी का पता मंगवाने हेतु कहा तो बदरा जी ने भाई मरदाना जी को सुलतानपुर लोधी भेज दिया। भाई मरदाना जी गुरु जी से दस वर्ष बड़े थे।''

अपने आलेख में स. सिमरजीत सिंघ जी ने

यह भी स्पष्ट किया है कि एक दिन गुरु जी वेईं नदी में स्नान करने गए तो भाई मरदाना जी वेईं नदी पर पहुंच गए। गुरु जी अकाल पुरख की आराधना में लीन थे। आहट सुनकर उन्होंने आने वाले का नाम पूछा। जवाब आया, ''जी मैं हूं दाना! दाना डूम!!'' श्री गुरु नानक देव जी ने मुस्कराते हुए कहा, ''दाना डूम नहीं, मरदाना! आज से तू 'मरदाना' है।'' उस दिन से भाई साहिब का नाम 'मरदाना' मशहूर हो गया।

सुलतानपुर लोधी श्री गुरु नानक देव जी की खबर लेने गए भाई मरदाना जी गुरु जी के नूर से नूरी हो गए। जहां एक ओर श्री गुरु नानक देव जी भाई मरदाना जी की मधुर व सुरीली आवाज और उनके समर्पण-भाव से प्रसन्न हुए और उन्हें अपना भाई बना लिया, वहीं भाई मरदाना जी भी पूर्णतया श्रद्धा एवं निष्ठा से गुरु जी को समर्पित हो गए। बेबे नानकी जी के पश्चात् भाई मरदाना जी ने श्री गुरु नानक देव जी का ईश्वरीय रूप में साक्षात्कार किया।

कलियुगी जीवों के उद्धार हेतु श्री गुरु नानक देव जी ने चार उदासियां (धार्मिक यात्राएं) की। इस संदर्भ में भाई गुरदास जी का कथन है :

बाबा देखै धिआनु धरि
जलती सभि प्रिथवी दिसि आई।
बाझु गुरू गुबारु है, है है करदी सुणी लुकाई।
बाबे भेख बणाइआ उदासी की रीति चलाई।
चढ़िआ सोधणि धरति लुकाई।।

(वार १:२४)

इन प्रचार यात्राओं के दौरान श्री गुरु नानक देव जी के साथ थे- उनके साथी भाई मरदाना जी। बेशक यह राह आसान न थी, घर से बेघर होकर कठिन राहों से गुजरना पड़ा, खाने-पीने, विश्राम आदि की कोई व्यवस्था नहीं थी। पीछे घर-परिवार के भरण-पोषण आदि समस्त चिंताओं से गुरु जी ने भाई मरदाना जी को अंचित कर दिया था। परिणामस्वरूप सहर्ष भाई मरदाना जी गुरु जी के साथ चलने को तत्पर हुए। इस संदर्भ में 'गुरू नानक प्रकाश' में उल्लेख है :

प्रभ जी त्रिसना मन ते मूकी।
आन जानि की आसा चूकी।
तुम समान को नदरि न आवै।
दिनकर पिख खद्योत न भावै।

वस्तुतः सूर्य रूपी बाबा नानक पातशाह के दर्शन एवं संगति के समक्ष घर-परिवार सब कुछ तुच्छ प्रतीत होने लगे थे भाई मरदाना जी को। मोह-ममता से ऊपर उठकर सच्चा इश्क हो गया था श्री गुरु नानक देव जी के साथ। प्रचार-यात्राओं पर जाने से पूर्व गुरु जी ने भाई मरदाना जी को एक विशेष रबाब लेने भेजा, जिसके लिए पैसे बेबे नानकी जी ने दिए। भाई फरिंदे ने यह रबाब अपने कर-कमलों से बड़ी निष्ठा, लगन एवं श्रद्धा-भावना से तैयार की थी। यह रबाब भाई मरदाना जी के हाथों का स्पर्श पाकर धन्य हुई, क्योंकि श्री गुरु नानक देव जी ने जब भाई फंरिदे से रबाब लेकर भाई मरदाना

जी को दी थी, तो साथ ही आशीर्वाद से भी निवाजा था। आपके वचन थे-- ''मरदानिआ! तुझे तार का गुण दिया!'' भाई मरदाना जी को जो संगीत में महारत हासिल थी, इसका वर्णन भाई गुरदास जी ने अपनी वारों में किया है :

भला रबाब वजाइंदा मजलस मरदाना मीरासी।

(वार ११:१३)

इसके अतिरिक्त भाई मनी सिंघ जी वाली जन्म-साखी के अनुसार श्री गुरु नानक देव जी ने प्रचार-यात्रा पर जाने से पूर्व भाई मरदाना जी को तीन वचन दृढ़ करवाए-- अमृत वेले सतिनामु का जाप करना, केश कत्ल नहीं करवाने तथा जरूरतमंदों की सहायता करना। भाई मरदाना जी ने ताउम्र गुरु जी के प्रत्येक हुक्म को माना और प्रत्येक हुक्म का पूर्णतया पालन किया।

श्री गुरु नानक देव जी की इलाही बाणी और भाई मरदाना जी की रबाब ने केवल लोगों को ही मंत्र-मुग्ध नहीं किया, अपितु पशु-पक्षियों तक को भी प्रभावित किया।

जन्म-साखियों में भाई मरदाना जी महत्वपूर्ण पात्र हैं, जो पाठकों की रूह तक प्रभाव डालते हैं। श्री गुरु नानक देव जी की बाणी और भाई मरदाना जी के संगीत ने लोगों के हृदय रूपान्तरित कर दिए।

भाई मरदाना जी लगभग ५५ वर्ष श्री गुरु नानक देव जी की संगति में रहे और अपने जीवन-काल का अन्तिम श्वास भी गुरु जी की पावन गोद में ही लिया। इतिहासकारों के अनुसार प्रचार-यात्रा के उपरान्त देश वापिस आए तो अफगानिस्तान में कुरम (खुरम) नदी के किनारे स्थित कुरम नगर में इन्होंने परलोक गमन किया। वहां इनकी पावन स्मृति में एक यादगार बनी हुई है। इनके अन्तिम संस्कार के संदर्भ में इनसे श्री गुरु नानक देव जी ने पूछा कि ''आपके अंतिम संस्कार के पश्चात् आपकी समाधि किस प्रकार तैयार करवायी जाए? ''भाई मरदाना जी का बड़ा सुंदर जवाब था-- ''जब मेरी आत्मा शरीर रूपी समाधि से निकल जाएगी तो फिर इसको पत्थर या ईंटों की समाधि में कैद क्यों किया जाए! मैं तो अपनी आत्मा को केवल अपने शरीर का साथी समझता हूं।'' इस पर गुरु जी का प्रत्युत्तर था-- 'मरदानिआ! तूने ब्रह्म को पहचान लिया है! तू ब्रह्मज्ञानी है! तू आवागमन से मुक्त हुआ!''

भाई मरदाना जी के वंशज गुरु-घर में कीर्तन करने की परम्परा का निर्वाह निरंतर करते रहे। आजीवन भाई मरदाना जी गुरु जी के प्रति अथाह प्रेम एवं श्रद्धा-भावना से समर्पित रहे तथा पूर्ण गुरसिक्ख की मिसाल कायम की।

समाज-सुधारक एवं साहित्यकार : भक्त नामदेव जी

*-स. जसविंदर सिंघ खांबरा**

भक्त नामदेव जी की बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज है। भक्त नामदेव जी ने अपनी मातृ-भाषा मराठी के साथ-साथ राजस्थानी, खड़ी बोली, पंजाबी और मिश्रित भाषाओं में बाणी उच्चारण की। भक्त नामदेव जी द्वारा १८ रागों में उच्चरित ६१ शबदों को पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज किया। आप जी की बाणी भूले-भटके लोगों का मार्गदर्शन करते हुए अकाल पुरख के साथ जोड़ती है, जीवन को उचित व सही ढंग से जीवन जीने की प्रेरणा देती है; गलत संस्कारों एवं रीति-रिवाजों को त्यागने के लिए शिक्षा देती है।

भक्त नामदेव जी का जन्म सन् १२७१ ई. में पिता श्री दामासेठ (दमसेती) जी तथा माता गोनाबाई जी के घर महाराष्ट्र के जिला सतारा के गांव नरसी बामणी में हुआ था। आप जी का विवाह श्री गोबिंद सेठ की सुपुत्री माता राजाबाई (राजाई) जी के साथ सम्पन्न हुआ। इनके घर में चार सुपुत्रों-- नारायण, महादेव, गोबिंद, विट्ठल तथा एक पुत्री-- लिंबाबाई ने जन्म लिया। भक्त नामदेव जी ने विसोबा खेचर जी को गुरु धारण किया। आप बचपन से ही साधु स्वभाव के मालिक थे। आपके जीवन-काल में अनेक आलोकिक गाथाएं आपके नाम के साथ जुड़ी हुई मिलती हैं, जैसे विसोवा खेचर को गुरु धारण करने की गाथा, मूर्ति को दूध पिलाना, मृत गाय को जीवित करना, देहुरे का घूमना, प्रभु द्वारा स्वयं उनका छप्पर बनाने की गाथा इत्यादि।

भक्त नामदेव जी की बाणी जात-पांत, ऊँच-नीच, छुआ-छूत के भेदभाव का खंडन करती है। आपकी विचारधारा सरल और सहज है। आम लोगों का कल्याण कर उन्हें प्रभु-भक्ति के साथ जोड़ना, कर्मकांडी व्यवस्था को तोड़ना आदि आप जी के जीवन का मूल उद्देश्य रहा है। भक्त जी की विशेष उल्लेखनीय बात है कि उन्होंने वारकरी संप्रदाय को त्याग कर विट्ठल (प्रभु) की प्रेमा-भक्ति को अपनाया। आप जी ने प्रभु की प्रेमा-भक्ति, प्रभु के नाम-सिमरन को ही बेसहारों का सहारा और सर्वोत्तम धर्म माना है :

हरि हरि करत मिटे सभि भरमा।।
हरि को नामु लै ऊतम धरमा ।

**मुख्य संपादक, सैन खोज पत्रिका, नकोदर रोड, खांबरा, जलंधर-१४४०२६ फोन-९४१७०-९४२२३*

हरि हरि करत जाति कुल हरी।।
सो हरि अंधुले की लाकरी।१ ।।. . .
प्रणवै नामा ऐसो हरी।।
जासु जपत भै अपदा टरी।।. . .
पांडे तुमरी गाइत्री लोधे का खेतु खाती थी।।
लै करि ठेगा टगरी तोरी
लांगत लांगत जाती थी।।१ ।।
पांडे तुमरा महादेउ धउले बलद चड़िआ आवतु देखिआ था।। *(पन्ना ८७४)*

भक्त नामदेव जी ने जो संसारी लोगों पर परोपकार किया है, उसे भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने अडंबरों, अंधविश्वासों से लोगों का ध्यान हटाया, परम पिता परमात्मा की भक्ति के लिए प्रेरित किया। भक्त जी ने बताया कि जिसके पास प्रभु-नाम का उपहार होता है वह केवल सांसारिक इच्छाओं को त्यागने में ही सफल नहीं होता, अपितु मोह-माया के भवसागर से पार जाने में भी योग्य हो जाता है :

सिमरि सिमरि गोबिंदं।।
भजु नामा तरसि भव सिंधं।। (पन्ना ८७३)

भक्त नामदेव अपनी बाणी में मनुष्यों को सही मार्ग पर चलने का उपदेश दिया है :

जप हीन तप हीन कुल हीन क्रम हीन।
नामे के सुआमी तेऊ तरे।। (पन्ना ३४५)

उन्होंने बताया कि प्रभु का नाम-सिमरन ही हमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि से बचाकर रखता है। शब्द-ज्ञान के माध्यम से हमें सब्र, संतोष, संयम, सहजता, दया, निर्भयता, सेवा, समर्पण, कुर्बानी, श्रम, मानवीय प्रेम जैसे सद्गुणों की प्राप्ति होती है। भक्त नामदेव जी का फरमान है कि जिस मनुष्य में यें गुरु-शबद समाया होगा, वही मुक्ति कर सकता है।

भक्त नामदेव जी अपनी बाणी में फरमान करते हैं कि जो व्यक्ति पराए धन, पराए तन से दूर रहकर, परमात्मा के नाम के साथ जुड़कर, श्रम करते हुए नाम-सिमरन की कमाई करता है, परमात्मा सदा उसके निकट होता है :

घर की नारि तिआगै अंधा।।
पर नारी सिउ घालै धंधा।। (पन्ना ११६४)

निस्संदेह कहा जा सकता है कि भक्त नामदेव जी क्रांतिकारी भक्त हुए हैं। भक्त जी के अनुसार पदार्थवाद, भौतिकवाद संसार माया का रूप है, जिसमें मानव इतना लीन हो जाता है कि वह अपने असली मकसद को भूल जाता है और भटक कर भ्रष्ट, निकृष्ट कामों को प्राथमिकता देने लगता है।

सिक्खी-जीवन का आदर्श : श्री करतारपुर साहिब

*-डॉ. कशमीर सिंघ नूर**

सिक्ख इतिहास में श्री करतारपुर साहिब नामक दो नगर स्वयं में महत्वपूर्ण व उच्च कोटि की ऐतिहासिक एवं धार्मिक पहचान व संस्कृति संभाले हुए हैं। दोनों नगर ही जगत-प्रसिद्ध हैं और दोनों नगरों के प्रति सिक्ख श्रद्धालुओं के मन में असीम श्रद्धा पाई जाती है। पाकिस्तान में स्थित श्री करतारपुर साहिब पवित्र नगर जगत-गुरु श्री गुरु नानक देव जी ने अकाल पुरख को समर्पित कर बसाया था। जलंधर ज़िले में स्थित श्री करतारपुर साहिब पवित्र नगर पांचवें पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने बसाया था।

परमात्मा को कई नामों द्वारा याद किया जाता है। उनमें से एक नाम 'करतार' भी है। इस शब्द के अर्थ हैं-- सृष्टिकर्ता, सृजक आदि। श्री गुरु नानक देव जी ने श्री करतारपुर साहिब नगर बसाकर 'करतार' शब्द को और विस्तृत रूप प्रदान कर दिया। उन्होंने यहां पर रहकर स्वयं कृषि-कार्य किया। शबद-कीर्तन कर करतार की महिमा गायन की, गुणगान किया। कहा जा सकता है कि करतारपुर परमात्मा का स्थान है, यह विशुद्ध श्रम का, आलौकिक कथा-कीर्तन का, प्रभु की कीर्ति का भी परिचायक है, पवित्र प्रतीक है।

इस प्रस्तुत आलेख में पाकिस्तान में स्थित पवित्र स्थान श्री करतारपुर साहिब तथा वहां पर मौजूद गुरुद्वारा श्री दरबार साहिब के बारे में जानकारी देने की कोशिश की गई है। श्री गुरु नानक देव जी ने जब यह नगर बसाया, तब उनके श्रद्धालुओं ने इसका नाम 'नानक चक्क' प्रस्तावित किया। पातशाह जी ने नगर का नाम करतार के नाम पर 'करतारपुर' रखा। सिक्ख इतिहास के अनुसार श्री गुरु नानक देव जी ने श्री करतारपुर साहिब नगर अविभाजित पंजाब के ज़िला गुरदासपुर के कसबा कलानौर एवं तहसील शकरगढ़ में रावी दरिया के पश्चिमी तट पर अपनी प्रथम उदासी (१४९७-१५०८ ई.) के बाद बसाया था। सन् १५२२ ई. में उन्होंने इस स्थान पर जब स्थायी निवास किया तो अपने पारिवारिक सदस्यों को यहीं पर बुलवा लिया था। आजकल शकरगढ़ को पाकिस्तान के ज़िला नारोवाल के नाम से जाना जाता है और वर्तमान में यह स्थान लाहौर से १२० किलोमीटर दूर है। भारत-पाकिस्तान सीमा से इसकी दूरी ४.७ किलोमीटर है। इस स्थल पर श्री गुरु नानक देव जी की गतिविधियों के बारे में भाई गुरदास जी ने अपनी पहली वार में इस प्रकार वर्णन किया है :

फिरि बाबा आइआ करतारपुरि

**बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, फोन : ९८७२२-५४९९०*

भेंखु उदासी सगल उतारा।
पहिरि संसारी कपड़े मंजी
बैठि कीआ अवतारा।...
गिआनु गोसटि चरचा सदा
अनहदि सबदि उठे धुनकारा।
सोदरु आरती गावीऐ अंम्रित वेले जापु उचारा।
गुरमुखि भारि अथरबणि तारा।।३८।।...
जारति करि मुलतान दी
फिरि करतारिपुरे नो आइआ।
चढ़े सवाई दिहि दिही
कलिजुगि नानक नामु धिआइआ।...
थापिआ लहिणा जींवदे
गुरिआई सिरि छत्रु फिराइआ।
जोती जोति मिलाइ कै
सतिगुर नानकि रूपु वटाइआ।... ४५।।

यहां आकर श्री गुरु नानक देव जी ने लगभग १८ वर्ष तक कृषि-कार्य किया। फिर इसी स्थान पर ही गुरु जी ने भाई लहिणा जी को गुरुआई के योग्य पाकर उन्हें अपना उत्तराधिकारी घोषित किया और उन्हें गुरुआई सौंप कर 'अंगद' नाम प्रदान किया। इस प्रकार श्री गुरु अंगद देव जी दूसरे गुरु बने। यह महान घटना ७ सितम्बर, १५३९ ई. की है।

ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार इसी पावन स्थान पर श्री गुरु नानक देव जी ने कृषि-कार्य की किरत करनी शुरू कर दी। बड़ी संख्या में श्रद्धालु उनके पास आने लगे। इस देश के आम लोग कर्मकांडों, आडम्बरों, निकृष्ट रीति-रिवाजों के चक्रव्यूह में फंसे हुए थे। करतारपुर साहिब की भूमि कर्मकाण्डों, मूर्ति-पूजा, ढोंग से मुक्त थी। डेढ़ पहर शेष रहते रात्रि को गुरु साहिब स्नान कर, नाम-सिमरन के उपरांत संगत के बीच आकर विराजमान हो जाते। जपु जी साहिब का पाठ और आसा की वार का कीर्तन होता। शबद की व्याख्या व कथा का प्रवाह भी चलता। फिर संगत सुबह का प्रशाद ग्रहण करती। इसके बाद खेतों में कृषि-कार्य, पशुओं की देखभाल, नगर की सफाई आदि का कार्य करते।

शाम को पुनः गुरबाणी का कीर्तन होता। रहरासि साहिब का पाठ होता। एक बार फिर सभी पंगत (पंक्ति) में बैठकर लंगर छकते। उपरांत सोहिला साहिब का पाठ कर विश्राम करते। इस भांति श्री करतारपुर साहिब सिक्खी जीवन के अभ्यास का एक उत्कृष्ट व शानदार मॉडल बन गया। यहां की मर्यादा को देखकर दुनिया वाले हैरान हो जाते और कहते कि ये कैसे सिक्ख हैं? कैसे धर्मात्मा हैं? कैसे साधु हैं? सिक्खों की टोलियां खेतों में काम करती, लंगर पकाने हेतु लकड़ियों का प्रबंध करती, पशुओं की देखभाल करती दिखाई देतीं। निठल्ले रहने वाले तथाकथित साधु-फकीर दांतों तले उंगिलयां दबा लेते। सोचते, क्या साधु-संत भी श्रम किया करते हैं?

धीरे-धीरे इस नगर की जनसंख्या बढ़ने लगी और संगत की आमद में भी इजाफा होने लगा। उस समय की परिस्थितियों एवं ज़रूरतों के अनुसार संगत के लिए निवास स्थान बनवाए

गए। कथा-कीर्तन हेतु भी एक विशेष स्थान बनाया गया। यहां पर रहने वाले सभी श्रद्धालु एक साथ कृषि-कार्य करते, लंगर तैयार करते और एक साथ मिलकर छकते। अत: यह कहा जा सकता है कि संगत व पंगत की परंपरा इस स्थान से ही विकसित हुई।

उस समय भारतीय समाज जात-पांत, ऊंच-नीच एवं धर्मों के आधार पर हुए विभाजन द्वारा बुरी तरह से खोखला हो चुका था। श्री गुरु नानक देव जी ने उन सभी लोगों को मिलकर लंगर तैयार करने और पंगत में एक साथ बैठकर छकने की प्रक्रिया अपनाने के लिए कहा। इससे जात-पांत, ऊंच-नीच के बंधन टूटने शुरू हो गए। स्नेह, प्यार, अपनत्व, समानता, तथा सम्मान के मानवीय गुण लोगों में पैदा होने शुरू हो गए। इस स्थान पर गुरु जी ने कृषि का उत्तम कार्य शुरू कर और इसमें जनमानस को भी शामिल कर संसार के समक्ष सच्चे श्रम के संकल्प व महत्व को पेश किया। इस प्रकार श्री गुरु नानक देव जी का 'नाम जपो, किरत करो और वंड (बांटकर) छको' का महान संदेश व उपदेश श्री करतारपुर साहिब से पूरी दुनिया तक पहुंचा। उनके इस महान संदेश, उपदेश तथा सिद्धांत ने भारतीय समाज में बदलाव लाने के क्रांतिकारी सिद्धांतों का जलवा बिखेर दिया।

श्री गुरु नानक देव जी द्वारा श्री करतारपुर साहिब में किए गए निर्माण-कार्य के विषय में कहा जाता है कि रावी दरिया में वर्षा ऋतु में बाढ़ आने के कारण ये निर्माण दरियाबुर्द हो गए थे। प्रसिद्ध सिक्ख विद्वान डॉ. रतन सिंघ (जग्गी) ने 'सिक्ख पंथ विश्व कोश' (भाग-प्रथम) में वर्णित किया है कि श्री गुरु नानक देव जी के सपुत्रों-- बाबा श्रीचंद जी तथा बाबा लखमी दास जी ने रावी नदी के बायें तट पर (जिला गुरदासपुर में) गुरु जी का नया डेहरा (देहरा) आबाद किया, जो कि 'डेरा बाबा नानक' नाम से प्रसिद्ध हुआ। बाद में गुरु-प्रेमियों, उद्यमशील सिक्खों ने रावी नदी के पार पुरातन श्री करतारपुर साहिब नगर बसा लिया। कहा जाता है कि गुरुद्वारा श्री दरबार साहिब श्री करतारपुर साहिब की वर्तमान इमारत का निर्माण महाराजा रणजीत सिंघ के काल में करवाया गया था। इसके बाद पटियाला रियासत के महाराजा स. भुपिंदर सिंघ ने १,३५,६०० रुपए खर्च कर इस इमारत का नवीनीकरण करवाया। फिर सन् १९९५ ई. में पाकिस्तान की सरकार ने भी इस इमारत की मरम्मत का काम पुन: शुरू करवाया, जो कि सन् २००४ ई. में पूरा हुआ था।

देश-विभाजन के समय पाकिस्तान में रह गए सिक्ख गुरुधामों के दर्शन व सेवा-संभाल के लिए समूचा सिक्ख पंथ गत् कई वर्षों से अरदास करता आ रहा है। इस भावना की संवेदनशीलता को समझते हुए श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार स. मोहन सिंघ नागोके द्वारा २५ जनवरी, १९५२ ई. को जारी हुकमनामें के आधार पर सिक्खों की रोज़ाना अरदास में '' श्री ननकाणा साहिब तथा अन्य गुरुद्वारों-गुरुधामों,

जिनसे पंथ को विछोड़ा गया था, खुले दर्शन-दीदार एवं सेवा-संभाल का दान खालसा पंथ जी को बख्शना (प्रदान करना) जी''-- ये पंक्तियां जोड़ी गई थीं। संस्थागत रूप से इस मांग को लोक-आवाज़ बनाने के लिए पहली बार प्रयास स. कुलदीप सिंघ वडाला की अनथक कोशिशों से बनी 'गुरुद्वारा करतारपुर रावी दर्शन अभिलाषी संस्था' द्वारा शुरू हुए। स. वडाला के नेतृत्व में हज़ारों सिक्ख संगत द्वारा १३ अप्रैल, २००१ को वैशाखी वाले दिन डेरा बाबा नानक के निकट अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर रावी दरिया के धुस्सी बांध पर खड़े होकर पहली बार गुरुद्वारा श्री दरबार साहिब, करतारपुर साहिब के दर्शन के लिए भारत तथा पाकिस्तान की सरकारों के समक्ष रास्ते की मांग अरदास के रूप में की गई। संगत की उपस्थिति में निर्णय लिया गया कि प्रत्येक अमावस्या को यहां आकर रास्ते के लिए अरदास की जाया करेगी। एक अद्भुत संयोग यह हुआ कि श्री गुरु नानक देव जी ने अपने जीवन के लगभग अठारह वर्ष श्री करतारपुर साहिब की धरती पर गुजारे औऱ स. वडाला व उनके साथियों के इस मुकद्दस स्थान के दर्शन प्राप्त करने की अरदास भी लगभग अठारह वर्ष बाद सफल हुई। इतने लंबे समय बाद दोनों देशों की सरकारें रास्ता खोलने के लिए सहमत हुईं तथा श्री करतारपुर साहिब में स्थित गुरुद्वारा श्री दरबार साहिब के खुले-दर्शन-दीदार सिक्ख संगत को हुए।

इतिहासकार मुंशी सोहन लाल का कथन है कि ''आत्मिक-मानसिक शांति व तृप्ति के लिए शहर व क्षेत्र के लोग श्री करतारपुर साहिब में गुरु जी की शरण में आते थे। वे खुशियां प्राप्त करते। गुरु जी के दीदार की बदौलत उनकी आँखों में जलवा एवं नूरानी चमक आ जाती। यहीं पर गुरु जी ने विरोध करने वाले सन्यासियों, वैरागियों, योगियों की प्रत्येक शंका व उलझन का निवारण किया और करतार के सच्चे ज्ञान का बोध करवाया। असंख्य गृहस्थी लोग भी उनके पास वहां प्रतिदिन आए रहते थे।'' भाई गुरदास जी की गवाही है :

बाणी मुखहु उचारीऐ हुइ रुसनाई
मिटै अंधारा। (वार १:३८)

साक्ष्य है कि भाई लहिणा जी अक्तूबर, सन् १५३२ ई. में उनकी शरण में आए। उन्होंने नि:स्वार्थ व निष्काम भावना से अपने इष्ट की सेवा की। भाई लहिणा जी गुरु जी की परीक्षा कसौटी पर सही पाए गए और फिर भाई लहिणा जी से गुरु अंगद देव जी बने। श्री गुरु नानक देव जी श्री करतारपुर साहिब में ही ७ आश्विन, संवत् १५९६ तद्नुसार ७ सितंबर, १५३९ ई. को परम ज्योति में समा गए। पुस्तक The Sikhs Archer लिखता है: Nanak is by the way, the most conspicuous if not only Indian Reformer who made definite arrangement for successor, whose primary responsibility was preservation and spread of his own message.

बाबा बंदा सिंघ बहादुर : सिक्खी आस्था का प्रतीक

-डॉ नरेश*

बाबा बंदा सिंघ बहादुर को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के प्रति अगाध श्रद्धा थी। सबसे पहले बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने १७०९ ई. में कैथल का सरकारी खजाना छीना। फिर उन्होंने समाणा जाकर नवम गुरु जी को शहीद करने वाले को सबक सिखाने के लिए और जलालुद्दीन के इस शहर की ईंट से ईंट बजा दी। फिर उन्होंने कपूरी जाकर अत्याचारी कमर-उद्-दीन को सजा दी।

साढौरा का शासक उसमान खान सिक्खों व हिन्दुओं का कट्टर विरोधी था। उसके शासन-काल में हिंदू-सिक्ख अपने मृतक परिजनों का दाह संस्कार भी नहीं कर सकते थे। उसमान खान ने पीर बुद्धू शाह को इसलिए कत्ल कर दिया था, क्योंकि उसने भंगाणी के युद्ध में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का साथ दिया था। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने साढौरा पर आक्रमण किया और जुलम करने वालों को खत्म किया।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर का अगला निशाना सरहिंद था। यहां पर वज़ीर खान ने साहिबज़ादों को जिंदा दीवार में चिनवाया था। १७१० ई. में उन्होंने चप्पड़चिड़ी नामक स्थान पर अपनी सेना वज़ीर खान की सेना के साथ भिड़ा दी। भयानक युद्ध हुआ। इस युद्ध को निर्णयात्मक सिद्ध होना था, इसलिए वज़ीर खान स्वयं युद्ध में उतर आया। उसकी मौत ही शायद उसको युद्ध-क्षेत्र में खींच कर ला रही थी। भाई फतिह सिंघ की कृपाण ने उसे चीर डाला। वज़ीर खान और उसके सहायक कट्टरपंथी मुसलमानों से बदला लेने के लिए बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने सरहिंद में तख्ता पलट दिया। उसने छोटे साहिबज़ादों को दीवार में जिंदा चिनवाने का सुझाव देने वाले वज़ीर खान के दरबारी सुच्चा नंद को उसके अपराध की सज़ा देने के लिए उसे मौत के घाट उतार दिया।

सन् १७१३ में फ़र्रुखसियर बादशाह बना तो उसने अब्दुल समद खान को पंजाब का सूबेदार बना दिया और आदेश दिया कि बाबा बंदा सिंघ बहादुर की बढ़ रही शक्ति को समाप्त किया जाए! समद खान की शूरवीरता लोक-

*१६९, सेक्टर-१७, पंचकूला-१३४१०९, फोन : ९४१७३६५६७६

प्रसिद्ध थी। उसको 'दलेर जंग' भी कहा जाता था। बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शक्ति कम होने के स्थान पर बढ़ती जा रही थी। १७१५ ई. के आरंभ में उसने बटाला और कलानौर पर कब्ज़ा कर लिया था। इस समाचार से क्रुद्ध हुए फ़र्रुखसियर ने मुग़ल, पठान और राजपूत सेना पंजाब भेज दी, जिसने गुरदास नंगल को घेरा डाल कर आने-जाने का रास्ता बंद कर दिया। आठ महीने तक बाबा बंदा सिंघ बहादर और उनकी फौज शाही सेना का मुकाबला करती रही। अन्ततः जब खाने के लिए वृक्षों के पत्ते भी समाप्त हो गए तो पंजाब के शेरदिल सैनिक निढाल हो गए। तब बाबा बंदा सिंघ बहादुर और उनके सैनिक बन्दी बना लिए गए।

२९ फरवरी, १७१६ ई. को सभी बन्दी बनाकर दिल्ली लाए गए। बाबा बंदा सिंघ बहादुर को लोहे के पिंजरे में कैद करके दिल्ली की गलियों में घुमाया गया। ५ मार्च, १७१६ ई. से प्रतिदिन बाबा बंदा सिंघ बहादुर के सैनिकों को क्रमबद्ध रूप से शहीद किया जाने लगा। शाही सेना तीन महीने तक बाबा बंदा सिंघ बहादुर औऱ उनके साथियों को शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा देती रही, ताकि वे अपना धर्म परिवर्तित कर मुसलमान बन जाएं। जब मुगलों का अमानवीय व्यवहार भी इन वीरों को झुका न पाया तो ९ जून, १७१६ ई. को इनको जुलूस की शक्ल में महरौली लाया गया। बाबा बंदा सिंघ बहादुर की आँखों के सामने उनके चार वर्षीय पुत्र अजै सिंघ के टुकड़े कर दिए गए और उसकी छाती फाड़कर, उसका दिल निकालकर बाबा बंदा सिंघ बहादुर के मुँह में ठूँस दिया गया। फिर बाबा बंदा सिंघ बहादुर की बारी आई। पहले उनकी दायीं औऱ फिर बायीं आँख निकाल दी गई। तदनन्तर उनके हाथ-पैर काटे गए। लोहे की गर्म सलाखें उनके शरीर में घुसेड़ी गईं। अन्ततः उनकी गर्दन काट कर उन्हें शहीद कर दिया गया।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर का धर्महठ देखकर एक मुसलमान अहलकार ने व्यंग्य कसते हुए कहा, ''हैरानी की बात है कि तुम्हारे जैसा भला आदमी हमारी सलतनत में तबाही मचाता रहा और अब स्वयं तबाह हो रहा है।'' बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने शान्त भाव से कहा, ''जब पाप हद से बढ़ जाता है तो परमात्मा मेरे जैसे किसी व्यक्ति को पाप का अन्त करने के लिए भेजता है।''

नवंबर 1984 ई. की त्रासदी

– डॉ. परमवीर सिंह*

टूटी हड्डियां, जुदा हुए अंग, शरीर में से बह रहा ख़ून किसी के मन में हमदर्दी पैदा नहीं कर रहा था। दवा-दारू तो बहुत दूर रहा, बच निकलना भी मुश्किल हो गया था। सिक्खों को कत्ल (शहीद) या ज़लील करने का जो भी ढंग किसी के मन में आ रहा था, उसका दिल खोल कर प्रयोग किया जा रहा था। अविवाहित, विवाहित, गर्भवती, अधेड़ और बुज़ुर्ग सिक्ख महिलाओं का अपमान आम बात हो गई थी। . . . मलिष्ठ वृत्ति वाले लोगों को शराब, पैसा, हथियार, मिट्टी का तेल, पेट्रोल, फास्फोरस और सिक्खों के घरों की सूची पकड़ा दीं गई।. . . सिक्खों का बीज नाश करने के लिए चोर, पुलिस, लुटेरे, कातिल, कामी, कमीने और कट्टरपंथी आपस में मिल गए थे। बड़े नेता 'अपने भगवान' (राजीव गांधी) का दुख कम करने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ना चाहते थे। एक दूसरे से बढ़ कर बेरहमी और अमानवीय ढंग से सिक्खों का कत्ल करने को ये नेता 'धर्म का काम' समझ रहे थे।

धर्मों के इतिहास में सिक्ख धर्म सबके बाद प्रकट हुआ है और जल्दी ही इसने संसार के धर्मों में अपना स्थान बना लिया है। यह स्थान बना लेने का कारण यह है कि इसने कर्मकांड से मुक्त आध्यात्मिक मार्ग की प्रफुल्लता के साथ-साथ समाज की धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक समस्याओं को सीधे व सरल ढंग से मुखातिब किया है। मानवता की रक्षा और मान-मर्यादा को बहाल कराने के लिए इस धर्म के पैरोकारों ने अनगिनत शहादत दी, जेल काटी तथा अन्य बहुत-से शारीरिक व मानसिक कष्ट झेले। ग़ुलामी की हालत में जीवन बसर कर रहे लोगों को आत्म- सम्मान और आत्माभिमान का पाठ पढ़ा कर गुरु साहिबान ने जब्र एवं ज़ुल्म का मुकाबला करने के लिए जो ख़ालसा पंथ तैयार किया था उसी कारण यहाँ के लोगों को आज़ादी की फिजा में आनंद प्राप्त करने का अवसर मिला है। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने समाज में आत्माभिमान स्थापित करने की जो चिंगारी पैदा की थी, बाबा बंदा सिंघ बहादुर तथा सिक्ख सरदारों ने उसे मन में धारण कर ऐसे निर्णायक युद्ध किये थे कि बाहरी हमलावर भारत की तरफ मुँह करने से डरने लगे थे। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने जहाँ स्थानीय हाकिमों की गहरी जड़ें उखाड़ कर समानता वाले समाज की स्थापि की थी, वहीं मिसलों के समय सिक्ख सरदारों ने आम लोगों को बाहरी हमलावरों के

*सिक्ख विश्वकोष विभाग, पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला– १४७००२, फोन : ८९७२०-७४३२२

जब्र, ज़ुल्म और लूटमार से बचाने के लिए स्वतंत्र सत्ता की स्थापना कर ली थी। मिसल सरदारों द्वारा स्थापित किए गए राज में 'रक्षा प्रबंध' का विशेष महत्व था, जिसमें समूह वर्ग के लोगों को बिना किसी भेदभाव के सुरक्षा प्रदान की जाती थी।

मुगलों के बाद जब अंग्रेज़ों ने यहाँ के लोगों को ग़ुलाम बना लिया तो भी लोक- भलाई और देश की आज़ादी में सिक्खों ने अग्रणी भूमिका निभाई थी। अमेरिका और कनाडा में निवास कर रहे सिक्ख अपने सुख-आराम छोड़ कर देश को आज़ाद कराने के लिए भारत आए थे। सेलुलर और देश की अन्य विभिन्न जेलों में सख़्त सज़ा काटने के साथ-साथ इन्होंने भारत के राजसी नेताओं द्वारा चलाए जा रहे स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया और साथ ही हथियारबंद संघर्ष कर रही आज़ाद हिंद फ़ौज का हिस्सा बन कर शहादत प्राप्त की थी। आज़ादी के पश्चात् जागरूक होकर सिक्ख देश के विकास में योगदान दे रहे थे। इस दौरान पहले पंजाबी सूबा मोर्चा और फिर आपातकाल के विरोध की घटनाओं के कारण सिक्ख तथा विशेष रूप से शिरोमणि अकाली दल केंद्र सरकार की आँखों में चुभने लगे थे। केंद्र सरकार और सिक्खों के मध्य पैदा हुए टकराव के कारण पहले जून १९८४ ई. फिर नवंबर १९८४ ई. की घटनाएँ सामने आईं। जून १९८४ ई. के दौरान चाहे पंजाब के बहुत-से गुरुद्वारों पर 'आपरेशन ब्लू स्टार' के अधीन फ़ौजी कार्यवाही की गई थी, परन्तु श्री अकाल तख़्त साहिब इसका केंद्रीय स्थान बन गया था। इसी प्रकार नवंबर १९८४ ई. के दौरान देश के विभिन्न हिस्सों में सिक्खों का कत्ल-ए-आम हुआ था लेकिन दिल्ली केंद्रीय स्थान के रूप में सामने आई। ये दो घटनाएँ सिक्ख इतिहास के न पलटे जा सकने वाले पन्ने हैं। प्रत्येक वर्ष का कैलंडर जब इन महीनों में प्रवेश करता है तो सिक्खों को अतीत में घटी घटनाएँ याद आने लग जाती हैं। इन घटनाओं से सम्बन्धित बहुत कुछ लिखा गया है और बहुत-सी परतें खोलने के यत्न निरंतर जारी हैं। इस सम्बन्ध में स. सुरजीत सिंघ सोखी द्वारा दिल्ली तथा भारत के दूसरे हिस्सों में घटित सिक्खों के कत्ल-ए-आम से सम्बन्धित विवरण चार भागों में तैयार किये गए थे।

दिल्ली और भारत के दूसरे हिस्सों में सिक्खों के हुए कत्ल-ए-आम के तथ्यों की जानकारी एकत्रित करने के लिए शिरोमणि अकाली दल ने स. सुरजीत सिंघ सोखी की ज़िम्मेदारी लगाई थी। इनके द्वारा एकत्रित किये गए तथ्य चार भागों में प्रकाशित किए गए थे। इन चार भागों में उत्तर प्रदेश, उड़ीसा, हिमाचल प्रदेश, कलकत्ता, दिल्ली, पश्चिमी बंगाल, बिहार, मध्य प्रदेश आदि राज्यों में हुए सिक्ख कत्ल-ए-आम के विवरण प्रकाशित किये गए हैं। इन घटनाओं के बारे में जानकारी प्रदान करने वाले चश्मदीदों के बयान, लुटेरों और फ़सादी लोगों की मानसिकता, राजनैतिक व सामाजिक

संस्थाओं के नुमायंदों द्वारा दिए गए बयान और योगदान, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा पीड़ितों की सहायता, पीड़ितों के विवरण, परिवारों का हाल और कुछ साहित्यिक लेख इस पुस्तक में शामिल किये गए हैं।

भावनात्मक तौर पर तथ्यों को बयान करने वाली यह पुस्तक इतिहास की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है। घटना वाले स्थानों पर जाकर घटनाओं को निकट से देखना, पीड़ितों के सहानुभूतिपूर्वक बयान एकत्रित करने, इन घटनाओं के समय आम लोगों के रवैये को महसूस करना, साहित्यिक और राजनैतिक शख़्सियतों द्वारा समूचे घटनाक्रम से सम्बन्धित लिखितों एवं बयानों को संभाल लेना आदि ऐसी विधियां हैं, जो लिखित को प्रमाणिकता प्रदान करती हैं। इस पुस्तक के आधार पर समूचे घटनाक्रम का विश्लेषण करते हुए महसूस होता है कि इस कत्ल-ए-आम ने नामधारी, नीलधारी, सहजधारी, सिंघ सभीए, निरमले, दुकानदार, विद्यार्थी, दूध पीते बच्चे, कारोबारी, नौकरी-पेशा, फ़ौजी, गुरुद्वारा साहिबान के सेवादार, ड्राइवर, मालिक, नौकर, डॉक्टर, राजनीतिज्ञ, पत्रकार, कारीगर, दस्तकार, शिल्पकार, मज़दूर, ट्रांसपोर्टर आदि सब भिन्नताएं दूर कर दी थीं। सभी सिक्ख नज़र आ रहे थे। टूटी हड्डियां, जुदा हुए अंग, शरीर में से बह रहा ख़ून किसी के मन में हमदर्दी पैदा नहीं कर रहा था। दवा-दारू तो बहुत दूर रहा, बच निकलना भी मुश्किल हो गया था। सिक्खों को कत्ल (शहीद) या ज़लील करने का जो भी ढंग किसी के मन में आ रहा था, उसका खुल कर प्रयोग किया जा रहा था।

सिक्खों के साथ-साथ, इन घटनाओं के दौरान, दुकान, मकान, गुरुद्वारे, दफ़्तर, मोटर साइकिल, कार, बस, स्कूटर, ट्रक आदि जलाने में गर्व महसूस किया जाने लगा था। टी. वी., वी. सी. आर., ए. सी., नकदी, गहने और घर का अन्य सामान लूटने में बहादुरी दिखाई जा रही थी।

अविवाहित, नवविहाहित, गर्भवती, अधेड़ और बुज़ुर्ग सिक्ख महिलाओं का अपमान करना आम बात हो गई थी। इस कत्ल-ए-आम के दौरान सिर से दुपट्टा उड़ चुका था। चूल्हे की जगह चिताएं जल रही थीं। औलाद का कोई नामो-निशान नहीं था। शरीर अपंग हो गए थे। शरीर पर कपड़ा नहीं बचा था। आकाश देखते-देखते रात गुज़र जाती थी। ऐसे समय में एक विधवा, बलात्कार का शिकार और संतान से विहीन हो चुकी माँ की क्या हालत हो सकती है, कोई मनोविज्ञान भी नहीं बता सकता। सरकार का सारा तानाबाना सिक्खों का बीज नाश करने पर लगा हुआ था। किसी से इंसाफ़ की कोई उम्मीद नहीं थी।

नवंबर, १९८४ ई. में सिक्खों का कत्ल-ए-आम इस दृष्टि से आरंभ किया गया था कि इनका बीज नाश करना है। इस कार्य के लिए आम लोगों के मन में सिक्खों के ख़िलाफ़ नफ़रत पैदा कर उन्हें समाज से अलग करना

ज़रूरी था ताकि चुन-चुन कर उनका शिकार किया जा सके। भारत का अमन-पसंद नागरिक सरकार की इस योजना का हिस्सा नहीं बन सकता था, इसलिए चोरों, लुटेरों, कातिलों, बदमाशों, गाँवों के मलिष्ठ वृत्ति वाले ज़मींदारों, भंगियों और झुग्गी-झोंपड़ी वालों का सहारा लिया गया। इन मलिष्ठ वृत्ति वाले लोगों को शराब, पैसा, हथियार, मिट्टी का तेल, पेट्रोल, फास्फोरस और सिक्खों के घरों की सूची पकड़ा दी गई। ये सूचियां राशन कार्ड वाली दुकानों और वोटर सूचियों से प्राप्त की गई थीं। सत्ता पक्ष के नेता नफ़रत फैलाने, भड़काने और कत्लोगारत करने के लिए उकसा रहे थे। इनके घिनौने काम में पुलिस दख़ल-अंदाज़ी न कर सके इसलिए बड़े नेताओं द्वारा पुलिस अधिकारियों को विशेष हिदायतें जारी कर दी गई थीं। कई छोटे दर्जे के पुलिस अधिकारी और सिपाही या तो हिंसक भीड़ और फ़सादी लोगों का साथ देने लगे थे या फिर घटना-स्थल से भाग गए थे। जहाँ कहीं भी थोड़े-बहुत सिक्ख इकठ्ठा होकर भीड़ का मुकाबला कर रहे थे तो पुलिस अपना काम शुरू कर देती थी। सुरक्षा के नाम पर पुलिस सिक्खों से कृपाण आदि ले जाती थी और फ़सादी लोगों को उनका पता बता देती थी। सिक्खों का बीज नाश करने के लिए चोर, पुलिस, लुटेरे, कातिल, कामी, कमीने और कट्टरपंथी आपस में मिल गए थे। दिमाग़ का इस्तेमाल निश्चित किए गए निशाने पर पहुंचने हेतु किया जा रहा था। पुलिस नेताओं के प्रति अपनी वफ़ादारी दिखाने के लिए पूरा ज़ोर लगा रही थी और छोटे नेता अपने बड़े नेताओं की ख़ुशी हासिल करने के लिए जी-जान से जुटे हुए थे। बड़े नेता 'अपने भगवान' (राजीव गांधी) को खुश करने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ना चाहते थे। एक दूसरे से बढ़ कर बेरहमी और अमानवीय ढंग से सिक्खों का कत्ल करने को ये नेता धर्म का काम समझ रहे थे। जब बाड़ ही खेत को खाने लग जाए तो खेत को कौन बचा सकता है! सिक्खों का सबसे ज्यादा नुकसान उन राज्यों में हुआ था जहाँ कांग्रेस की सरकार थी। जहाँ ग़ैर- कांग्रेसी सरकारें थीं, वहाँ फ़सादी लोगों को सख़्ती के साथ रोका गया था।

दूसरी तरफ़, सिक्खों को भारतीय लोकतंत्र और सरकारी प्रशासन पर पूर्ण भरोसा था। वृत्ति वाले जो लोग उनका नुकसान कर रहे थे, उनसे बचने के लिए वे स्थानीय नेताओं या पुलिस वालों के पास रिपोर्ट करने के लिए यत्न करने लगे थे। जो भी सिक्ख ऐसा करता था, वह पहचान में आ जाता था और उसे अपनी जान से हाथ धोने पड़ जाते थे। उस समय पुलिस और प्रशासन से और ज्यादा उन हिन्दू भाइयों की भूमिका अधिक सकारात्मक थी जो सदियों से बने हुए भाईचारे को बचाने के लिए आगे आ रहे थे और सिक्खों को अपने घरों में पनाह देकर बचाने के लिए पूरी ताकत लगा रहे थे। अपनी जान की परवाह किये बिना उन्होंने अपने सिक्ख भाइयों की मदद की थी।

भारत की राजधानी दिल्ली में जब सिक्खों का कत्ल-ए-आम आरंभ हुआ तो उन्हें यह सोचने का मौका ही नहीं मिला कि उनका क्या कसूर था। रेलगाड़ियों, बसों, टैक्सियों में यात्रा कर रहे, ट्रक, बस, आंटो, ठेला, रिक्शा चलाने वाले; विवाह की तैयारी कर रहे, श्री गुरु नानक देव जी के प्रकाश-पर्व से सम्बन्धित तैयारियों में व्यस्त, अस्पतालों में इलाज अधीन, दिल्ली की सैर करने गए, विदेशों की तरफ यात्रा की तैयारी कर रहे, बाज़ारों में आवश्यक घरेलू सामान की ख़रीदो-फ़रोख़्त करने में व्यस्त हुए, दफ्तरों और दुकानों में काम कर रहे सिक्खों के ध्यान में यह नहीं था कि सिक्ख होना ही उनका सबसे बड़ा गुनाह बन जायेगा; केश और दसतार ही उनकी मौत का वारंट बन जाएंगे।

ज़करिया ख़ान के समय में भी सिक्खों के सिरों के मूल्य लगाए गए थे, जिनका उन्होंने डट कर मुकाबला किया था। सिक्खों ने अपने धर्म के साथ-साथ दूसरे धर्म वालों की भी रक्षा की थी। सत्ताधारी लोग हिंदुओं की बहू-बेटियों की इज्जत पर हाथ डालने से इसलिए संकोच कर जाते थे, क्योंकि सिक्ख ऐसा करने वालों को आड़े हाथों लेते थे। दुश्मनों और हमलावरों के लिए तो सिक्ख एक जंगजू कौम है जिसके होते भारत की ओर कोई आँख उठा कर नहीं देख सकता। १९८४ ई. के घटनाक्रम के समय तो ये उनके अपने थे जिनसे कभी यह उम्मीद नहीं की जा सकती थी। सत्ताधारियों और हमलावरों के साथ जूझते हुए सिक्ख फख्र अनुभव करते थे, मगर अब इनको यह मुल्क पराया लगने लग गया था। जिस श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी से शक्ति प्राप्त कर सिक्खों ने इस देश के लोगों और मानवता को बचाया था, उसे ही अग्नि-भेंट करते वक्त एक पल भी सोचा नहीं जा रहा था।

दिल्ली में हुआ कत्ल-ए-आम राजधानी की बहुत ही भयानक तसवीर पेश कर रहा था। जले हुए मकानों और गुरुधामों के साथ-साथ जगह-जगह बिखरे हुए मांस के टुकड़े, ख़ून के तालाब, मानव हड्डियां, कटे हुए लंबे बाल, गलियों-बाज़ारों में बदबू फैलाती अर्ध-जली लाशें, ख़ून के आँसू बहा रही बच्चियाँ और विधवा महिलाएं आदि ऐसे भयभीत करने वाले दृश्य दिल्ली के भद्दे शृंगार का प्रदर्शन कर रहे थे। घर-घर बने शमशानघाट इस देश के मानवाधिकारों और 'हिंदी हैं हम' नारे को मुँह चिड़ा रहे थे।

दिल्ली में हुआ कत्ल-ए-आम कोई सांप्रदायिक दंगे नहीं थे, बल्कि यह एक दल द्वारा गुंडों, बदमाशों और पुलिस की सहायता से सिक्खों की नसलकुशी करने के लिए उठाया गया योजनाबद्ध कदम था। इस सम्बंध में यह बात भी महत्वपूर्ण है कि सिक्खों को शहीद करने के बाद उनका सामान लूटा गया और बहुत-से स्थान पर सिक्ख महिलाओं के गहनों, नकदी तथा अन्य कीमती समान की तरफ ध्यान ज्यादा दिया गया। बहुत-से स्थान पर सिक्ख महिलाओं की हुई बेपती व

बलातकार यह सिद्ध करते हैं कि लोगों के मन पर विकारी वृत्ति भारू थी, जो कि फ़सादी लोगों की कमज़ोर मानसिकता और सरकारी सरपरस्ती का प्रदर्शन करती। देश की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के कत्ल के बाद जिस ढंग से पार्टी कार्यकर्ताओं और फ़सादी लोगों को भड़काया गया था, उससे यही लगता है कि सिक्खों और हिंदुओं के आपसी टकराव को उच्च स्तर पर ले जाने के लिए गंभीर यत्न किये जा रहे थे और कुछ स्थानों पर वे सफल भी हो गए थे। दिल्ली और भारत के दूसरे इलाकों में पसरा सिक्खों का कत्ल-ए-आम सेना का नियंत्रण हो जाने के पश्चात् थम गया था। बहुत-से शरणार्थी कैंपों में हिंदुओं के पार्टी- मुक्त बुद्धिमान भाईचारे द्वारा सिक्खों के प्रति दिखाई हमदर्दी भी यह साबित करने में सहायक होती है कि दिल्ली में योजनाबद्ध ढंग से हुए सिक्ख कत्ल-ए-आम के कारण धर्म से ज्यादा राजनैतिक थे।

लोगों की धार्मिक भावनाओं को भड़का कर राजनैतिक नेता अपनी रोटियाँ सेक रहे थे। निशाना केवल सिक्ख थे। लोगों को सिक्खों के विरुद्ध भड़काने हेतु अफ़वाहों का बाज़ार गर्म किया गया कि इंदिरा गांधी के कत्ल के पश्चात् सिक्ख मिठाइयां बाँट रहे हैं, भंगड़ा डाल रहे हैं, इन्होंने पानी में ज़हर घोल दिया है, पंजाब से आई एक रेलगाड़ी में हिंदुओं की लाशें हैं आदि-आदि। इस घटनाक्रम ने सिक्खों और हिंदुयों में सदियों से चले आ रहे भाईचारे व विश्वास में नफरत की दरार पैदा कर दी थी। इंसानियत की भावना रखने वालों को उन घटनाओं का ज्यादा दुख हुआ था जिनमें पड़ोसियों ने ही अपने सिक्ख भाइयों के नाम-पते बताए थे।

नवंबर, १९८४ ई. के दौरान घटी घटनाओं को देख-सुन कर देश-विदेश में बैठा प्रत्येक सिक्ख और मानव-हृदय, चाहे वह किसी भी राजनैतिक पार्टी या सोसायटी से सम्बन्धित था, रो रहा था, कुरला रहा था। दिल्ली में सिक्खों की नसलकुशी की समूची कार्यवाही सिक्खों को दबाने, भगाने और नीचा दिखाने वाली थी।

नवंबर १९८४ ई. के कत्ल-ए-आम के कुछ समय पश्चात् ही स. सुरजीत सिंघ सोखी द्वारा तैयार की गई यह पांडुलिपि इतिहास का अंग बन गई है। चश्मदीद गवाहों के बयानों और व्याख्यानों के आधार पर तैयार किया गया यह दस्तावेज़ समकालीन परिस्थितियों, घटनाओं, शख़्सियतों, राजनैतिक नेताओं, समाज-सेवी संस्थाओं, पुलिस और सिविल प्रशासन आदि से सम्बन्धित विस्तारपूर्वक रौशनी डालने के साथ-साथ बदली परिस्थितियों के सम्मुख आम लोगों के मन में सिक्खों के प्रति पैदा हुई भावनाओं का प्रदर्शन करती है।

ख़बरनामा

दिल्ली सिक्ख कत्लेआम से सम्बन्धित एक मामले में सज्जन कुमार और अन्य को बरी करना दुखदायी : एडवोकेट धामी

श्री अमृतसर साहिब : २० सितंबर : १९८४ ई. के दिल्ली सिक्ख कत्लेआम के दौरान सुल्तानपुरी इलाके की घटना से सम्बन्धित मामले में सज्जन कुमार सहित अन्य दोषियों को बरी करने से ३८ वर्ष से इंसाफ़ के लिए संघर्ष कर रहे पीड़ितों को गहरी मानसिक चोट पहुंची है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि सरकारों की कमजोर कारगुज़ारी से दोषी रिहा हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि सरकारों की यह जिम्मेदारी है कि सिक्ख विरोधी क्रूर कारनामों के सत्य को अदालतों के सामने पेश करना, मगर सरकारें सही तरीके से पक्ष रखने में नाकाम साबित हो रही हैं। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि सज्जन कुमार दिल्ली सिक्ख कत्लेआम के कई मामलों में दोषी है और मौजूदा समय में भी जेल में सज़ा काट रहा है। इससे अधिक और सबूत क्या हो सकता है! एडवोकेट धामी ने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी दिल्ली सिक्ख कत्लेआम के पीड़ितों को इंसाफ़ दिलाने के लिए इस फ़ैसले के ख़िलाफ़ उच्च अदालत में हर प्रकार की कानूनी कार्यवाही करने से पीछे नहीं हटेगी।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा गठित अंतर्राष्ट्रीय सिक्ख सलाहकार बोर्ड की हुई सभा

श्री अमृतसर साहिब : २५ सितंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा गठित किये गए अंतर्राष्ट्रीय सिक्ख सलाहकार बोर्ड की सभा डिजिटल माध्यम से हुई, जिसमें विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सभा का नेतृत्व शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने किया, जबकि इसमें शामिल होने वालों में भाई महिंदर सिंघ प्रमुख गुरु नानक निष्काम सेवा जत्था यूके, बीबी इंदरजीत कौर सिक्ख धरमा इंटरनेशनल अमेरिका, स. गुरमीत सिंघ (रंधावा) यूके, डॉ. कवलजीत कौर यूके, स. राजबीर सिंघ कनाडा, डॉ. गुरचरनजीत सिंघ (लांबा) अमेरिका, भाई गुरबख़्श सिंघ गुलशन यूके आदि उपस्थित थे। सभा के दौरान सिक्ख धर्म के वैश्विक सरोकारों को उभारा गया और विभिन्न देशों में सिक्खों की समस्याओं के बारे में विचार-चर्चा हुई।

वक्ताओं ने समूचे विश्व के सिक्खों को संगठित करने के लिए विशेष यत्न करने की ज़रूरत पर बल दिया। सभा के दौरान यह विचार

उभरा कि दुनिया में स्थित प्रत्येक गुरुद्वारा साहिब श्री अकाल तख़्त साहिब के साथ जुड़ा हो ताकि आज के वैश्विक प्रसंग में सिक्खों की ज़रूरतों, समस्याओं और कार्यों के लिए एक एजेंडा तैयार किया जाये। इसके अलावा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के समूचे इतिहास को प्रकाशित करने और अतीत में लिए गए फ़ैसलों एवं अहम राष्ट्रीय मामलों की कार्यवाही व पैरवी को संगत में प्रचारित करने के लिए यत्न करने की भी बात कही गई। इसके साथ ही सिक्ख रहित मर्यादा का प्रत्येक गुरु-घर तक प्रचार करने और विश्व स्तर पर सिक्ख पहचान के मामले को भी उठाया गया।

सभा के दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने सभी वक्ताओं का धन्यवाद करते हुए कहा कि ये मूल्यवान सुझाव लागू करने के लिए कार्यवाही की जायेगी। उन्होंने बताया कि आए सुझावों में से शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के इतिहास और प्रस्तावों को प्रकाशित करने का कार्य पहले से ही किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय सिक्ख सलाहकार बोर्ड सिक्खों के वैश्विक मामलों को लेकर गठित किया गया है, जिसकी भविष्य में सभाएं लगातार जारी रखी जाएंगी और प्राप्त सुझावों पर गौर किया जायेगा। इस अवसर पर सीनियर अकाली नेता स. गुलजार सिंघ रणीके, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य स. मंगविंदर सिंघ खापड़खेड़ी, स. हरजाप सिंघ सुलतानविंड, ओएसडी स. सतबीर सिंघ (धामी), अंतर्राष्ट्रीय सिक्ख सलाहकार बोर्ड के कोआरडीनेटर स. जसविंदर सिंघ जस्सी, उप सचिव स. शाहबाज सिंघ आदि उपस्थित थे।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा

सिंघ सभा लहर के 150 वर्षीय स्थापना दिवस पर विशाल समागम आयोजित

श्री अमृतसर साहिब : १ अक्तूबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा श्री गुरु सिंघ सभा लहर का १५० वर्षीय स्थापना दिवस गुरुद्वारा श्री मँजी साहिब दीवान हाल में एक विशाल गुरमति समागम आयोजित कर मनाया गया। इस शताब्दी समागम के अवसर पर बड़ी संख्या में सिक्ख पंथ की प्रमुख शख़्सियतें मौजूद थीं, जिन्होंने सिंघ सभा लहर के इतिहास और योगदान की रौशनी में सिक्ख कौम को पेश मौजूदा चुनौतियों का एकजुटता के साथ मुकाबला करने के लिए कहा। वक्ताओं ने अपने संबोधन के दौरान एक प्रचंड धर्म प्रचार लहर को आगे बढ़ाने की ज़रूरत पर भी ज़ोर दिया।

श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंघ ने संबोधित करते हुए कहा कि १५० वर्ष पूर्व शुरू हुई सिंघ सभा लहर ने

तत्कालीन चुनौतियों के विरुद्ध सिक्ख कौम में चेतन दस्तक दी थी, जिसका प्रभाव प्रत्येक सिक्ख ने कबूल किया। उन्होंने कहा कि आज भी कई चुनौतियां कौम के सामने हैं, जिनका मुकाबला इतिहास से दिशा लेकर करना पड़ेगा। जत्थेदार श्री अकाल तख़्त साहिब ने कहा कि तत्कालीन हालात की भांति मौजूदा समय में भी ईसाईअत का भ्रमजाल धर्म-प्रचार के नाम पर फैलाया जा रहा है। ईसाई धर्म द्वारा प्रचार-केंद्र खोलने के लिए ज्यादा धन का लालच देकर ज़मीन लेने की कई शिकायतें श्री अकाल तख़्त साहिब पर पहुंच रही हैं। उन्होंने कहा कि ज़मींदारों को सचेत होकर इस घटनाक्रम पर रोक लगानी पड़ेगी, ताकि सिक्ख सभ्याचार के विरुद्ध गतिविधियां आगे न बढ़ें। ऐसे हालात का मुकाबला करने के लिए सिक्ख संस्थाओं के साथ-साथ प्रत्येक सिक्ख को प्रचारक बन कर विचरण करना पड़ेगा और अपनी जिम्मेदारी निभानी पड़ेगी।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि सिंघ सभा लहर के नेताओं ने सिक्ख धर्म और सिक्खी सिद्धांतों की पहरेदारी की और सिक्खों को अपने राष्ट्रीय कर्त्तव्य के प्रति जागरूक किया। उन्होंने कहा कि सिक्ख इतिहास के ये पृष्ठ कौम के लिए प्रेरणा-स्रोत हैं। धर्म-आस्था के प्रति दृढ़ता ही राष्ट्रीय चुनौतियों में से बाहर निकाल सकती है। इसकी उदाहरण सिंघ सभा लहर का इतिहास है। उन्होंने कहा कि सिक्खी को चुनौतियों हर समय रही हैं। गुरु साहिबान के समय से ही सिक्खी के मानवतावादी सिद्धांत सत्ताधारी लोगों को खटकते रहे हैं। इसीलिए समय-समय पर कौम को कमज़ोर करने की साजिशें बनाई जाती रहीं। एडवोकेट धामी ने कहा कि इतिहास हमें यह प्रेरणा देता है कि चुनौतियों का समाधान एकजुटता से ही हो सकता है। उन्होंने कहा कि मौजूदा समय में भी पंथ-विरोधी शक्तियां सिक्खी की बात करने वाली संस्थाओं को कमज़ोर करने पर लगी हुई हैं, जिनके मुकाबले के लिए चेतन और बौद्धिक स्तर पर तैयार होना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि नौजवानी को सिक्ख विरासत के साथ जोड़ने के लिए संयुक्त प्रयास की ज़रूरत है, ताकि कौम के बेहतर भविष्य के लिए सिक्खी को समर्पित एक पौध तैयार हो सके। इस क्षेत्र में सिक्ख संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी लगातार प्रयत्न कर रही है और इसके सहयोग में सिक्ख संगत को अपनी बड़ी भूमिका के रूप में आना चाहिए।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के महासचिव भाई गुरचरन सिंघ (ग्रेवाल) ने कहा कि कौम का इतिहास भविष्य की तरज़ीह निर्धारित करने के लिए शक्ति-स्रोत का काम करता है। सिंघ सभा लहर ने कौम को एक मार्गदर्शन दिया है, जिसकी रौशनी में पंथक संस्थाओं के कार्यों को समर्थन देना बेहद

लाज़िमी है। उन्होंने कहा कि कौम-विरोधी लोग सिक्ख संस्थाओं को विखंडित करने के लिए उतावले हो रहे हैं, जिसके प्रति कौम को सचेत रहना पड़ेगा।

शिरोमणि अकाली दल के सीनियर नेता और पूर्व कैबिनेट मंत्री जत्थेदार गुलजार सिंघ रणीके, दल पंथ बाबा बिधी चंद के प्रमुख बाबा अवतार सिंघ सुरसिंघ, सिंघ साहिब ज्ञानी गुरमिंदर सिंघ, पदमश्री बाबा सेवा सिंघ खडूर साहिब, केंद्रीय श्री गुरु सिंघ सभा के नेता प्रो. शाम सिंघ चंडीगढ़ ने भी अपने संबोधन में गुरबाणी और सिक्ख इतिहास की पहरेदारी करने के लिए प्रेरणा की।

इस अवसर पर धार्मिक परीक्षा में से अव्वल रहने वाले १५५२ विद्यार्थियों को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से ३२ लाख रुपए की राशि वितरित की गई। लंगर-सेवा बाबा कशमीर सिंघ भूरीवाले संप्रदाय की तरफ से की गई। उपस्थित प्रमुख शख़्सियतों को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने सिरोपायो देकर सम्मानित किया। इतिहास को तस्वीरों के माध्यम से पेश करती चित्र-प्रदर्शनी भी आकर्षण का केंद्र रही।

समागम में शिरोमणि बुड्ढा दल के प्रमुख बाबा बलबीर सिंघ की तरफ से बाबा भगत सिंघ, बाबा सुखविंदर सिंघ भूरीवाले, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कनिष्ठ उपाध्यक्ष स. अवतार सिंघ रिआ, कार्यकारिणी कमेटी के सदस्य स. गुरनाम सिंघ जस्सल, सदस्य भाई रजिंदर सिंघ महिता, स. सुरजीत सिंघ भिट्टेवड्ड, स. गुरमीत सिंघ बूह, स. रघबीर सिंघ सहारनमाजरा, स. केवल सिंघ बादल, स. सतविंदर सिंघ टौहड़ा, स. अमरजीत सिंघ भलाईपुर, स. अमरीक सिंघ विछोआ, स. बलदेव सिंघ कल्याण, जत्थेदार गुरलाल सिंघ, भाई अजायब सिंघ अभ्यासी, स. सुरजीत सिंघ रायपुर, बीबी जोगिंदर कौर बठिंडा, बीबी जसबीर कौर ज़फ़रवाल, स. सुखमीत सिंघ कादियाँ, बीबी जोगिंदर कौर धरमकोट, स. हरदलबीर सिंघ शाह, स. सुरिंदर सिंघ किशनपुरा, स. गुरमिंदर सिंघ (चावला), श्री अकाल तख़्त साहिब के मुख्य ग्रंथी ज्ञानी मलकीत सिंघ, बाबा अमनदीप सिंघ सत्तो वाली गली, बाबा सुरिंदर सिंघ मिठ्टा टिवाणा, बाबा हरदेव सिंघ झाड़ साहिब, बाबा बलदेव सिंघ वल्ला, बाबा प्रगट सिंघ मजीठा, बाबा दरशन सिंघ टाहला साहिब, बाबा नरिंदर सिंघ दिल्ली वाले, बाबा नरिंदर सिंघ वल्ला, बाबा जोगा सिंघ तरुणा दल की तरफ से बाबा गुरविंदर सिंघ, बाबा सूरता सिंघ निरमले, बाबा सुखविंदर सिंघ सुलतानविंड, सिंघ सभायों की तरफ से स. हंसपाल सिंघ हंस बटाला, स. सुखदेव सिंघ संधावालिया, बीबी हरप्रीत कौर, बीबी सुरिंदर कौर, प्रिंसिपल नसीब सिंघ, प्रिं. सवरण सिंघ तुगलवाला, सचिव स. प्रताप सिंघ, ओएसडी स. सतबीर सिंघ, सचिव स. बलविंदर सिंघ

काहलवां, स. कुलविंदर सिंघ रमदास, स. बिजै सिंघ, स. गुरमीत सिंघ बुट्टर, प्रो. सुखदेव सिंघ, स. शाहबाज सिंघ, स. मनजीत सिंघ तलवंडी, मैनेजर स. भगवंत सिंघ धंगेड़ा, सुप्रिंटेडेंट स. मलकीत सिंघ बहिड़वाल, स. रजिंदर सिंघ रूबी सहित भारी संख्या में संगत उपस्थित थी।

आसाम की जेल में नज़रबंद सिक्खों के परिवारों और वकीलों को मुलाकात से रोकना दुर्भाग्यपूर्ण : एडवोकेट धामी

श्री अमृतसर साहिब : ४ अक्तूबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने आसाम की डिब्रूगढ़ जेल में नज़रबंद भाई अमृतपाल सिंघ तथा अन्य सिक्खों के पारिवारिक सदस्यों और वकीलों को मुलाकात की इजाज़त न देने पर एतराज़ प्रकट किया है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्यालय से जारी एक बयान में एडवोकेट धामी ने कहा कि डिब्रूगढ़ जेल में कैद सिक्खों के परिवारों को मिलने से रोकना मानवाधिकारों का उल्लंघन है। उन्होंने कहा कि श्री अमृतसर साहिब जिला उपायुक्त की तरफ से मुलाकात के लिए आवश्यक अनुमति न देना ठीक नहीं है। मानवाधिकारों के अंतर्गत कैदी के साथ उसके पारिवारिक सदस्यों और केस की पैरवी करने वाले वकीलों द्वारा मुलाकात करने का हक दबाया नहीं जा सकता। एडवोकेट धामी ने कहा कि दुख की बात है कि डिब्रूगढ़ जेल में बंद सिक्खों को इन्साफ लेने के लिए भूख हड़ताल करनी पड़ रही है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने पंजाब के मुख्यमंत्री को इस मामले पर संजीदगी के साथ गौर करने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि पंजाब सरकार इस मामले पर श्री अमृतसर साहिब के जिला उपायुक्त को तुरंत हिदायत जारी करे और आसाम की जेल में नज़रबंद सिक्खों के परिवारों व वकीलों को अनुमति प्रदान करे। उन्होंने जेल में बंद सिक्खों को स्वास्थ्य सुविधाएं सुनिश्चित करने के लिए भी पंजाब सरकार से कहा। एडवोकेट धामी ने कहा कि इस मामले में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा पहले से ही कानूनी सहयोग दे रहे एडवोकेट भगवंत सिंघ सिआलका को आवश्यक कार्यवाही करने के लिए कहा गया है, जो श्री अमृतसर साहिब के ज़िला उपायुक्त से मिलेंगे।

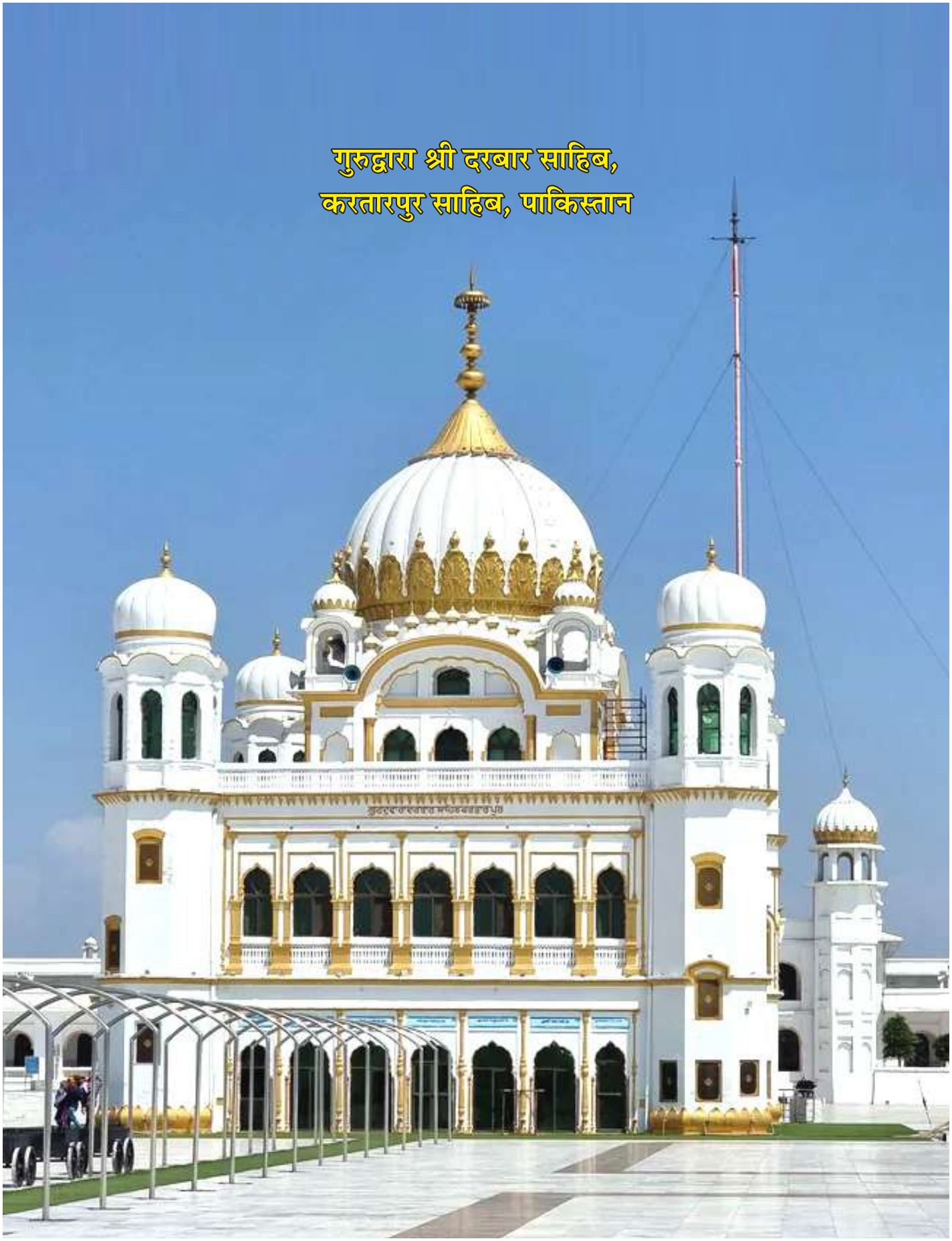

गुरुद्वारा श्री दरबार साहिब,
करतारपुर साहिब, पाकिस्तान

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665
Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2023-25 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2023-25

GURMAT GYAN

November 2023

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,
Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

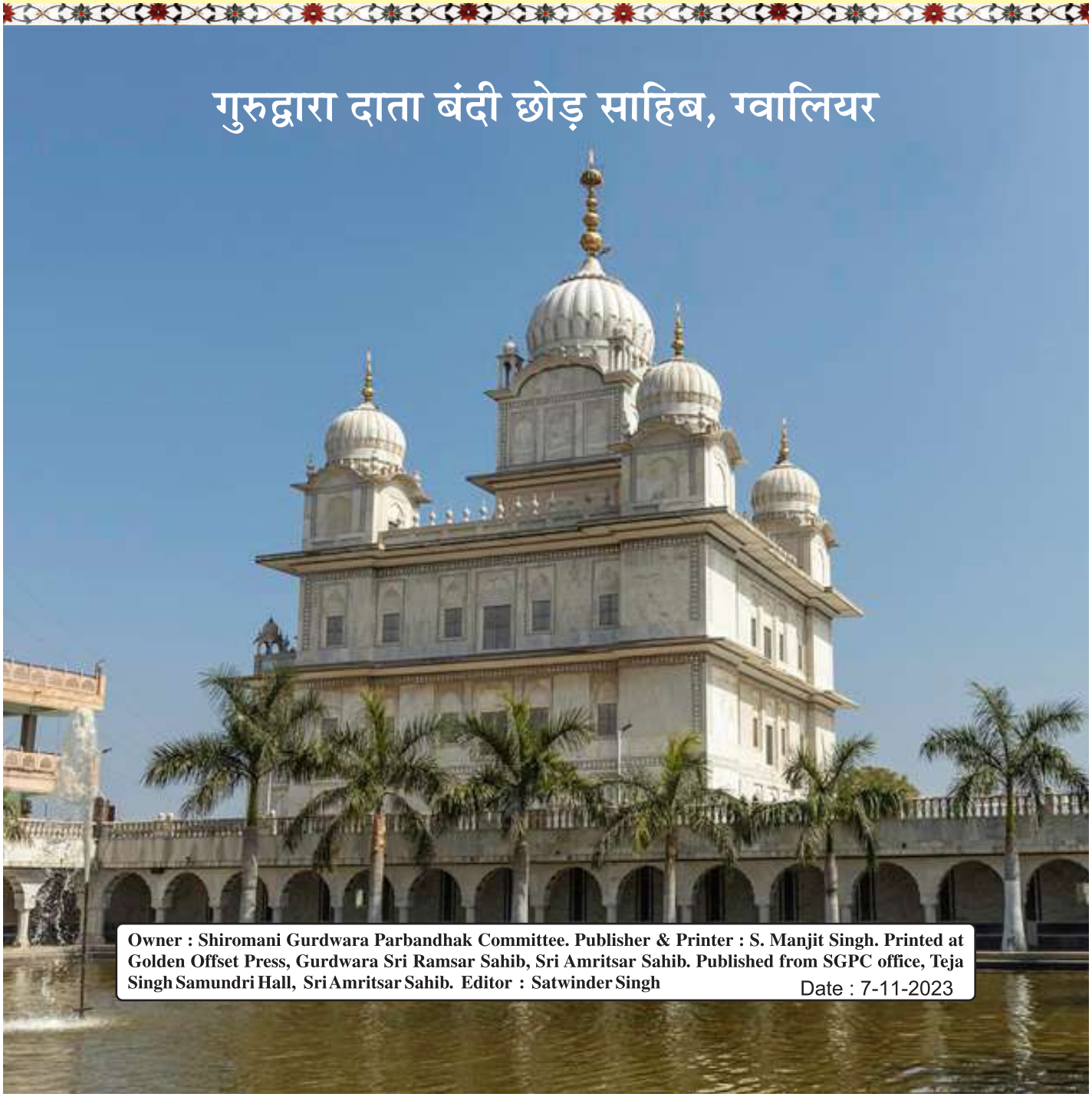

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar Sahib. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar Sahib. Editor : Satwinder Singh
Date : 7-11-2023